TITLE CODE : UPHIN50246

राष्ट्रीय हिन्दी साप्ताहिक

लोक पहल

शाहजहाँपुर | शुक्रवार | 21 जुलाई 2023 | शाहजहाँपुर से प्रकाशित | वर्ष :2 | अंक :21 | पृष्ठ :8 | मूल्य 2 रुपये

शर्मनाक : मणिपुर में दो महिलाओं को नंगाकर घुमाया

खेत में किया गैंगरेप, संसद से लेकर सुप्रीम कोर्ट तक बवाल

इन्फाल एजेंसी। करीब दो महीने हिंसा ग्रस्त पूर्वोत्तर राज्य मणिपुर से दिल दहला देने वाला वीडियो सामने आया है। वीडियो में सैकड़ों की भीड़ दो महिलाओं को सड़क पर निर्वस्त्र कर घुमाती दिख रही है। वीडियो में यह भी सामने आया है कि कुछ लोग दोनो महिलाओं के निजी अंगो के साथ छेड़छाड़ करते दिखाई दे रहे है। सोशल मीडिया पर वायरल वीडियो देखकर लोग गुस्से में है और प्रदेश सरकार से सख्त से सख्त सजा देने की मांग कर रहे है। एक आदिवासी संगठन ने आरोप लगाया है कि दोनो महिलाओं के साथ खेत में सामूहिक बलात्कार भी किया गया। आईटीएलएफ के एक बयान के अनुसार यह घटना राज्य की राजधानी इन्फाल से करीब 35 किलोमीटर दूर कांगपोकपी जिले में चार मई को हुई थी। कैमरे में रिकार्ड हुई इस बीभत्स घटना से एक दिन पहले ही मणिपुर में हिंसा शुरू हुई थी। यहां घाटी बहुसंख्यक मैतेयी और पहाड़ी बहुसंख्यक कुकी जनजाति के बीच अनुसूचित जनजाति का दर्जा देने की मैतेयी की मांग को लेकर हिंसा शुरू

हुई थी। हिंसा में अब तक करीब 200 लोगों की मौत हो चुकी है और लगभग साठ हजार लोग राहत शिविरों में रहने पर मजबूर है। अब इस खौफनाक वीडियो के सामने आने के बाद सभी को हिलाकर रख दिया है। दो महिलाओं को भारी भीड़ के बीच दिन में खुलेआम नंगा करके परेड कराया जा रहा है। भीड़ में चल रहे बहसी दरिंदे लड़की को थप्पड़ मार रहे है और उसके प्राइवेट पार्ट छूते हुए दिखाई दे रहे है। इस वीडियो के सामने आने के बाद सुप्रीम कोर्ट से लेकर संसद तक बवाल मचा हुआ है। सुप्रीम कोर्ट के मुख्य न्यायाधीश ने सरकार को कार्रवाई करने को कहा है और सख्त लहजे में कहा कि यदि सरकार कार्रवाई नहीं करेगी तो न्यायालय खुद कार्रवाई को अंजाम देगा। वहीं इस मामले को लेकर संसद में भी बवाल मचा हुआ है। हालांकि प्रधानमंत्री ने घटना पर चुप्पी तोड़ते हुए मात्र कुछ सेकण्ड का बयान जारी किया है लेकिन उसमें भी वह दो विपक्षी दलों की सरकार वाले राज्यों की कमियां भी गिनाते नजर आए।

भ्रष्टाचार, जातिवाद व भेदभाव पर बड़ा प्रहार करें अधिकारीः योगी

लोक पहल

लखनऊ। मुख्यमंत्री योगी आदित्यानाथ ने नव चयनित नायब तहसीलदारों से संवेदनशील होकर कार्य करने की नसीहत दी। कहा कि आपकी कार्यशैली जनता के प्रति जवाबदेह होगी तो किसी को 'मैं जिंदा हूं' की तख्ती लेकर नहीं बैठना पड़ेगा। जमीन की पैमाइश आदि के काम में निष्पक्षता से काम करने की सलाह देते हुए कहा आप एक अच्छे अधिकारी तभी साबित होंगे जब जनता को समय सीमा के भीतर न्याय देंगे।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने लोकभवन में 700 चयनित अधिकारियों के नियुक्ति पत्र बांटने के बाद उन्हें संबोधित कर रहे थे। उन्होंने नवनियुक्ति अधिकारियों से भ्रष्टाचार, जातिवाद व भेदभाव पर बड़ा प्रहार करने का आह्वान किया। कहा कि किसी भी प्रकार का वाद प्रदेश के विकास में बाधक है। छह साल पहले तक यूपी की पहचान एक बीमारू राज्य के रूप में थी, क्योंकि जगह–जगह बेईमान व भ्रष्ट लोगों को बैठा दिया जाता था। कहा कि 2017 में सत्ता संभालने के बाद सरकार ने बिना भेदभाव के काम करना शुरू किया। इसी का परिणाम है कि अब तक साढ़े पांच करोड़ लोग गरीबी रेखा से बाहर आ चुके हैं। यूपी देश की दूसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने की ओर अग्रसर है।

नवनियुक्त अधिकारियों से कहा कि आपके सार्वजनिक जीवन का कालखंड करीब 30–35 साल रहेगा। इसमें आपके सामने खुद की नई पहचान बनाने की कड़ी चुनौती होगी और वह आपके काम से बनेगी। इसलिए आपको सरकार के अंग के तौर पर जातिवाद, भाई– भतीजावाद, क्षेत्रवाद, भाषावाद और भ्रष्टाचार से दूर रहकर निष्पक्षता और पारदर्शिता से काम करने का संकल्प लेना होगा।

शाहजहांपुर के इतिहास में जुड़ेगा नया अध्याय

एसएस कालेज को राजकीय विश्वविद्यालय बनाने की प्रक्रिया शुरू, टीम ने किया निरीक्षण, शासन को भेजी रिपोर्ट

सुयश सिन्हा

शाहजहांपुर। करीब आठ दशक पूर्व स्वामी शुकदेवानन्द सरस्वती जी ने शिक्षा का जो बीज रोपा था वह आज एक वटवृक्ष बन चुका है। एक ही प्रांगण में केजी से लेकर पीजी तक की शिक्षा देने के साथ ही मुमुक्षु शिक्षा संकुल उच्च शिक्षा के क्षेत्र में एक और नया कीर्तिमान स्थापित करने की दिशा में प्रयासरत है। स्वामी शुकदेवानन्द महाविद्यालय राजकीय विश्वविद्यालय बनने की ओर अग्रसर है। जिला स्तर पर गठित कमेटी ने महाविद्यालय का निरीक्षण करने के बाद प्रस्ताव बनाकर शासन को भेज दिया है। शासन के निर्देश के बाद जिला स्तर पर डीआईओएएस, फायर सेफ्टी व तकनीकी टीम ने महाविद्यालय का निरीक्षण किया था। टीम ने अपनी रिपोर्ट शासन को भेज दी है। इसके बाद एसएस कालेज को राजकीय विश्वविद्यालय बनाने की प्रक्रिया में तेजी से आम शुरू हो गया है। आज से करीब छह दशक पूर्व स्वामी शुकदेवानन्द सरस्वती ने जो सपना देखा था वह उनके शिष्य स्वामी चिन्मयानन्द सरस्वती के अथक प्रयासों से साकार होता दिखाई दे रहा है।

पौराणिक पुण्य नदी देवहूति के पवित्र जल से प्रक्षालित तीर्थभूमि को स्वामी शुकदेवानंद जी महाराज ने, तब अपने चरणों से पवित्र किया जब वे अपने पूज्य गुरूदेव स्वामी एकरसानन्द सरस्वती जी महाराज के साथ सर्वप्रथम 1931 में शाहजहॉपुर आकर तिकुनियाबाग में ठहरे थे। वर्तमान में इसी स्थान पर मुमुक्षु आश्रम का विशाल प्रांगण स्थित है। दैवी सम्पद् मण्डल के महामण्डलेश्वर रहे ब्रह्मलीन स्वामी शुकदेवानन्द जी महाराज ने आध्यात्मिक के साथ शिक्षा के प्रसार के लिए विद्यालयों की स्थापना का संकल्प लिया। उन्होंने सबसे पहले दैवी संपद ब्रह्मचर्य संस्कृत विद्यालय की स्थापना का महती कार्य किया। 08 अगस्त सन् 1942 को ही शुकदेवानन्द जी महाराज ने वैदिक शिक्षा प्रचार और प्रसार के लिये संस्कृत महाविद्यालय की स्थापना मुमुक्षु आश्रम में की। श्री दैवी सम्पद् ब्रह्मचर्य संस्कृत महाविद्यालय के नाम से सुप्रसिद्ध इस महाविद्यालय में आज आचार्य तक की शिक्षा दी जाती है। इसके बाद उच्च शिक्षा के क्षेत्र में महाविद्यालय की स्थानीय आवश्यकता को देखते हुए स्वामी शुकदेवानन्द जी ने 08 मार्च सन् 1964 को स्वामी शुकदेवानन्द महाविद्यालय की आधारशिला रखी। शिलान्यास के अवसर पर देश के तत्कालीन गृहमंत्री गुलजारी लाल नंदा ने भवन का शिलान्यास किया। आज वही बीज एक वटवृक्ष बनकर एस.एस. पीजी कालेज के रूप में विकसित हुआ है और अब यह महाविद्यालय राजकीय विश्वविद्यालय बनने की ओर अग्रसर है। सन् 1989 में मुमुक्षु आश्रम में वर्तमान मुख्य अधिष्ठाता स्वामी चिन्मयानन्द का आगमन हुआ। उन्होंने अपनी मेधा और कुशल नेतृत्व क्षमता से विवादों का समापन कर लिया। महाराज श्री के आगमन से मुमुक्षु शिक्षा संकुल को प्रगति के नवीन पंख मिल गये। 25 फरवरी 2003 को जब मुमुक्षु शिक्षा संकुल के वार्षिक समारोह में उ.प्र. के तत्कालीन यशस्वी राज्यपाल माननीय विष्णुकान्त शास्त्री पधारे तो कुछ स्थानीय अधिवक्ताओं के विधि महाविद्यालय की स्थापना के अनुरोध को महामहिम ने तत्काल स्वीकृति प्रदान की और स्वामी चिन्मयानन्द जी महाराज की प्रेरणा और

आशीषों से वर्ष 2003 में विधि त्रिवर्षीय व 2007 में विधि पंचवर्षीय का पाठ्यक्रम प्रारम्भ हुआ। इस प्रकार स्वामी शुकदेवानन्द विधि महाविद्यालय की स्थापना हुयी। आज महाविद्यालय का एक बहुत ही भव्य और सुसज्जित भवन है। वहीं स्वामी शुकदेवानन्द स्नातकोत्तर महाविद्यालय के साथ मुमुक्षु शिक्षा संकुल की सभी पॉच शैक्षिक संस्थाओं के बहुमंजली भव्य परिसर है। जहॉ विश्व स्तरीय शैक्षिक सुविधायें उपलब्ध है। समय–समय पर संकुल में राष्ट्रीय अंतर्राष्ट्रीय शैक्षिक संगोष्ठियों का आयोजन किया जाता है। विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए बहुविध पाठ्य सहगामी क्रियाओं का आयोजन भी किया जाता रहा है। अनुसंधान और शिक्षा के क्षेत्र में महाविद्यालय के विभिनन विभागों द्वारा विभिन्न प्रोजेक्ट और शोध कार्य कराये जाते है। महाविद्यालय से मुमुक्षु जर्नल ऑफ ह्यूमिनिटीज नामक शोध पत्रिका निरंतर प्रकाशित हो रही है। वहीं दार्शनिक डॉ0 राधाकृष्णनन और श्रीमती इंदिरा गांधी के विचारों पर अध्ययन और अनुसंधान के लिये यूजीसी द्वारा शोधपीठों की स्थापना की गयी है। बता दें कि रूहेलखण्ड विश्वविद्यालय के अधीन करीब 300 महाविद्यालय है इतने बड़े स्तर पर महाविद्यालयों की निगरानी ठीक से नहीं हो पाती इसके चलते शासन ने और अधिक विश्वविद्यालय खोले जाने की योजना बनाई है। इसी क्रम में शाहजहांपुर के स्वामी शुकदेवानन्द महाविद्यालय को राजकीय विश्वविद्यालय बनाने की दिशा में काम शुरू हो गया है। जिले में उच्च शिक्षा के क्षेत्र में 53 महाविद्यालयों का संचालन हो रहा है। एसएस कालेज के राजकीय विश्वविद्यालय बनने से जहां एक ओर तमाम महाविद्यालयों को सुविधा मिलेगी, वहीं शोध कार्य और उच्च शिक्षा के क्षेत्र में युवाओं को अधिक अवसर प्राप्त हो सकेंगे। कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि पूर्व केन्द्रीय गृहराज्यमंत्री और मुमुक्षु शिक्षा संकुल के मुख्य अधिष्ठाता स्वामी चिन्मयानन्द सरस्वती के आशीषों की सघन छाया तले मुमुक्षु शिक्षा संकुल विकास के नित नवीन आयाम छू रहा है। स्वामी शुकदेवानंद जी महाराज ने शिक्षा का जो बीज बोया था आज वह स्वामी चिन्मयानंद सरस्वती के संरक्षण में विशाल वटवृक्ष का रूप ले चुका है और अब यह महाविद्यालय राजकीय विश्वविद्यालय बनने की ओर अग्रसर है।

मुमुक्षु आश्रम के मुख्य अधिष्ठाता व पूर्व केन्द्रीय गृहराज्यमंत्री स्वामी चिन्मयानन्द सरस्वती ने इस बावत बताया कि स्वामी शुकदेवानन्द जी महाराज ने जो सपना देखा था वह अब साकार रूप लेता दिखाई दे रहा है। शाहजहांपुर के इतिहास में एक नया अध्याय जुड़ने वाला है। स्वामी शुकदेवानन्द महाविद्यालय के राजकीय विश्वविद्यालय बनने से जनपद ही नहीं आस पास के जिलों में शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार होगा। इस सम्बन्ध में हमारी मुख्यमंत्री से वार्ता हो चुकी है प्रस्ताव बनाकर भेज दिया गया है फिर भी कैबिनेट से पास होने के बाद विश्वविद्यालय बनने में लगभग एक वर्ष का समय लग सकता है। यह शाहजहांपुरवासियों के लिए एक गर्व का क्षण है।

नगर निगम ने किया स्वच्छता रैली का आयोजन

मंत्री सुरेश खन्ना ने झंडी दिखाकर रैली को किया रवाना

लोक पहल

शाहजहांपुर। स्वच्छता के प्रति जागरूकता अभियान को लेकर नगर निगम के तत्वावधान में एक स्वच्छता रैली का आयोजन किया गया। रैली का शुभारंभ मुख्य अतिथि मंत्री सुरेश कुमार खन्ना ने हरी झंडी दिखाकर न सिर्फ रवाना किया वरन रैली का नेतृत्व भी किया। राजकीय इंटर कॉलेज क्रीड़ा मैदान से शुरू हुई रैली घण्टाघर पर समाप्त हुई जहां यह रैली एक बृहद सभा मे बदल गई। एक रैली गांधी पार्क गर्रा से शुरू हुई जो इसी रैली में आकर समायोजित हो गयी।इस मौके पर सभा को सम्बोधित करते हुए मुख्य अतिथि श्री खन्ना ने लोगों से स्वच्छता को अपनी दिनचर्या में शामिल करने की अपील की। उन्होंने सभी को शपथ भी दिलायी। उन्होंने कहा कि स्वच्छ सर्वेक्षण में भी सभी प्रतिभाग कर अपने महानगर को सम्मानित स्थान दिलाने के लिए समग्र प्रयास करें। सभा को सांसद अरुण कुमार सागर व महापौर अर्चना वर्मा ने भी सम्बोधित किया।रैली में बैण्ड स्काउट गाइड, कस्तूरबा गांधी विद्यालय, अटसलिया, रोटी गोदाम , सरदार पटेल हिन्दू इंटर कॉलेज, डॉ सुदामा प्रसाद, आर्य महिला इंटर कॉलेज, राजकीय इंटर कॉलेज, एनसीसी, लीड कान्वेंट, नेशनल गर्ल्स इंटर कॉलेज, आकांक्षा पब्लिक इंटर कालेज, आर्य कन्या पाठशाला इंटर कॉलेज, स्वामी धर्मानन्द सरस्वती इंटर कॉलेज, जनता इंटर कॉलेज, दैवी प्रसाद इंटर कॉलेज, राजकीय कन्या इंटर कॉलेज के छात्र छात्राओं व शिक्षक शिक्षिकाओं ने प्रतिभाग किया। कवि डॉ इन्दु अजनबी के संचालन में हुए कार्यक्रम में डीआइओएस हरवंश कुमार, बीएसए रणवीर सिंह, उपसभापति वेदप्रकाश मौर्य, कोऑपरेटिव बैंक अध्यक्ष डीपीएस राठौर, भाजपा जिलाध्यक्ष केसी मिश्र, महानगर अध्यक्ष अरुण गुप्ता, महामंत्री नवनीत पाठक,पूर्व जिला पंचायत अध्यक्ष अजय प्रताप सिंह, डॉ हेमेन्द्र वर्मा,अल्पना श्रीवास्तव, कुलदीप सिंह दुआ, दपिन्दर कौर, अनिल मालवीय, निकहत परवीन, तराना जमाल, रचना चांदना, शिल्पी गुप्ता, नगर निगम के पार्षद व अनेक लोग उपस्थित रहे।अन्त में सभी का आभार नगर आयुक्त सन्तोष कुमार शर्मा ने व्यक्त किया।

रोटरी क्लब ने नालंदा स्कूल में किया पौधारोपण

लोक पहल

शाहजहांपुर। रोटरी क्लब शाहजहांपुर के तत्वाधान में आज नालंदा स्कूल ऑफ एक्सीलेंस, कैंट शाहजहांपुर में रोटरी मेगा ट्री प्लांटेशन डे पर पौधारोपण किया गया। इस अवसर पर लोक भारती के राष्ट्रीय संगठन मंत्री बृजेन्द्र जी के साथ सह संगठन मंत्री गोपाल शर्मा, संजय उपाधयाय क्षेत्रीय प्रमुख एवं आइएमए के अध्यक्ष डॉ विजय पाठक ने पौधारोपण किया। स्कूल की प्रधानाचार्या अनिता श्रीवास्तव, उप प्रधानाचार्य संजय शर्मा तथा स्कूल के बच्चों के साथ क्लब के अध्यक्ष समीर सक्सेना, सचिव अजय शर्मा सुमन चंद्र गुप्ता नवीन कपूर, कंचन खन्ना, ज्योति शर्मा तथा ज्योति सक्सेना आदि उपस्थित रहे। गोपाल शर्मा ने नीम पीपल बरगद को एक साथ लगाने के अभियान पर प्रकाश डाला तथा 120 जगहों पर इसको लगा कर पर्यावरण को शुद्ध और वृहद करने की योजना का भी संकल्प दोहराया। अनिता श्रीवास्तव को रोटरी क्लब की ओर से सम्मान पत्र प्रदान किया गया। क्लब अध्यक्ष समीर सक्सेना ने डीएफओ प्रखर गुप्ता तथा कैंट सीईओ जिज्ञासा राज का आभार ज्ञापित किया।

एस एस कालेज में नवीन सत्र के लिए प्रवेश प्रारंभ

लोक पहल

शाहजहांपुर। स्वामी शुकदेवानंद महाविद्यालय में नवीन सत्र 2023–24 हेतु विभिन्न पाठ्यक्रमों में प्रवेश आरंभ हो चुके हैं। महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ आर के आजाद ने बताया कि स्नातक एवं स्नातकोत्तर दोनों ही पाठ्यक्रमों में नई शिक्षा नीति 2020 के तहत सेमेस्टर प्रणाली लागू हो चुकी है। स्नातक व परास्नातक दोनों पाठ्यक्रमों हेतु विद्यार्थी को विश्वविद्यालय की वेबसाइट पर रजिस्ट्रेशन एवं शुल्क जमा करके फॉर्म का प्रिंटआउट सभी आवश्यक दस्तावेजों सहित महाविद्यालय में जमा करना होगा। इसके उपरांत महाविद्यालय के द्वारा मेरिट सूची जारी करके विद्यार्थियों का प्रवेश सुनिश्चित किया जाएगा। कला संकाय के द्वारा मेरिट सूची जारी कर दी गई है। प्राचार्य श्री आजाद ने बताया कि विगत सत्रों की भांति इस बार भी महाविद्यालय में संचालित हो रहे सभी पाठ्यक्रमों में प्रवेश पूर्ण करके गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने हेतु हम सब पूर्ण रुप से तत्पर हैं।

महापौर व नगर आयुक्त ने लगाई झाड़ू, साफ की नालियां

आमजन को दिया स्वच्छता का संदेश

लोक पहल

शाहजहांपुर। नगर को स्वच्छ रखने की जिम्मेदारी केवल नगर निगम और सफाईकर्मियों की ही नहीं है इसके लिए आम जनता को भी अपनी जिम्मेदारी को समझना होगा और नगर को स्वच्छ रखने में अपना सहयोग देना होगा। इसी संदेश को जन–जन तक पहुंचाने के लिए शाहजहांपुर की महापौर अर्चना वर्मा व नगर आयुक्त संतोष शर्मा खुद ही झाड़ू और फावड़ा उठाकर शहर में निकल पड़े उन्होंने न केवल झाड़ू लगाकर सड़को साफ किया बल्कि गंदी नालियों को भी फावड़े से साफ कर नगरवासियों को स्वच्छता का संदेश दिया। नगर के कटिया टोला स्थित आर्य महिला इण्टर कॉलेज के पास महास्वच्छता अभियान के तहत आयोजित शिविर के दौरान महापौर अर्चना वर्मा, नगर आयुक्त संतोष कुमार शर्मा एवं क्षेत्र के सम्भ्रान्त नागरिकों ने गली–मोहल्लों व नाले–नालियों की सफाई की। इस मौके पर महापौर अर्चना वर्मा व नगर आयुक्त संतोष शर्मा ने आमजन से स्वच्छता रखने के सम्बन्ध में संवाद किया। व अपील कि अपने–अपने क्षेत्र को साफ एवं स्वच्छ रखने के लिए अपने घर के आसपास सफाई रखे, कचरे को इधर–उधर न फेंककर कचरे को एक उचित स्थान पर डालने एवं घरों से निकलने वाले सूखा व गीले कचरे को अलग–अलग कर नगर निगम द्वारा संचालित कूड़ा वाहन गाड़ी में डाले।

रंगकर्मी सौमित्र को मिली यंग स्कॉलरशिप

दो वर्षो तक रंगकर्म के क्षेत्र में करना होगा अध्ययन कार्य

आलोक सक्सेना

शाहजहांपुर। संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार की ओर से रंगकर्म के क्षेत्र में अध्ययन कार्य करने के लिए प्रदत्त युवा कलाकार छात्रवृत्ति के लिए शहर के युवा रंगकर्मी सौमित्र शुक्ला का चयन हो गया है।

शहर की इन्द्रानगर कालोनी के रहने वाले श्याम सुंदर शुक्ला और सुधा शुक्ला के बेटे सौमित्र एमएलआर थियेटर फाउंडेशन के प्रतिबद्ध कलाकार हैं। कानपुर विश्वविद्यालय से कृषि स्नातक सौमित्र ने साल 2017 में ख्यातिलब्ध निर्देशक महेश वशिष्ठ के रंग परिवर्तन स्टूडियो थियेटर, गुड़गांव से रंगमंच पर कदम रखा, यहां इन्होने, सबसे उदास कविता, काल कोठरी, अंधेर नगरी, होते अब जो तुम राम, पागलघर, माधवी, हाय हैंडसम आदि नाटकों में अभिनय सीखा। इस बीच एफटीआईआई पुणे की अभिनय कार्यशाला में भी प्रतिभाग किया।

साल 2019 में कोविड के चलते घर लौटे सौमित्र ने वरिष्ठ निर्देशक जरीफ मलिक आनंद के निर्देशन में नाटक मस्तमौला में अभिनय किया। साल 2022 में एमएलआर थियेटर फाउंडेशन के बैनर तले अंतर्राष्ट्रीय निर्देशक आरपीडी सोती के निर्देशन में आयोजित 3 माह की पूर्णकालिक रंग कार्यशाला में भाग लेकर नाटक किंग लियर में सशक्त अभिनय किया।

सौमित्र को रंगमंच के क्षेत्र में दो वर्ष तक अध्ययन कार्य करने के लिए संस्कृति मंत्रालय के अंतर्गत सीसीआरटी की ओर से यंग आर्टिस्ट स्कॉलरशिप मिलने की उपलब्धि पर एमएलआर थियेटर फाउंडेशन के निर्देशक आरपीडी सोती, वरिष्ठ रंगकर्मी जरीफ मलिक आनंद, ऋषभ शुक्ला, दिलीप आनंद, आलोक सक्सेना, अंकित सक्सेना, रवि चौहान, धर्मेन्द्र सिंह सिसोदिया, संकल्प अग्निहोत्री, आशीष बून, संजीव सोनू, अभिषेक कुमार सिंह, शालू यादव, रानी मिश्रा, अनामिका वर्मा, दुर्गेश कुमार, श्रीकांत वर्मा, जैद सिद्दीकी, रागिनी, लक्ष्मण मिश्रा, जय सिंह, सुमित कुमार, निखिल राणा, शुभ शर्मा आदि ने हर्ष व्यक्त किया है।

नगर आयुक्त जी बंदरों ने जीना किया हराम, दिलाओ मुक्ति

बंदरों के आतंक से निजात के लिए दिया ज्ञापन

लोक पहल

शाहजहाँपुर। शहर की रामनगर और आर्य नगर कालोनी के वाशिंदों ने मोहल्ले में बढ़ रहे बंदरों के आतंक के निवारण के लिए नगर आयुक्त संतोष शर्मा को ज्ञापन सौंपा। ज्ञापन देते हुए पार्षद पति कृष्ण गोपाल बिन्नू ने नगर आयुक्त को बताया कि फैक्ट्री स्टेट में मकान टूटने से अनेकानेक बंदर रामनगर और आर्य नगर कालोनी में आ गए हैं। यह बच्चो को काट रहे है और घरों की अनेक महिलाए छत से गिरकर चोटिल हो रही है। ऐसे में निगम को इस समस्या के निस्तारण हेतु विशेष प्रयास करने की जरूरत है। इस पर नगर आयुक्त ने कहा कि निगम बंदर पकड़वाने के प्रति कटिबद्ध है किंतु इसमें अनेक कानूनी औपचारिकताएं पूरी किया जाना जरूरी थीं, हालाकि अब तकरीबन यह पूरी हो चुकी है और अगले चार पांच दिन से पुनः बंदर पकड़ने का काम शुरू कर दिया जाएगा। डा. विकास खुराना ने नगर आयुक्त का ध्यान कालोनी की दुरूह सफाई व्यवस्था तथा पार्क की दयनीय दशा की ओर कराया। उन्होंने नगर आयुक्त से पार्क गेट पर लॉकिंग सिस्टम लगाने की बात कही ताकि हाल ही में लगाए गए पौधे जानवर नष्ट न कर सके। इस पर नगर आयुक्त ने तुरंत इस संदर्भ में निर्देश जारी कर दिए। इस अवसर पर धर्मबीर, रावल, जुगल तनेजा, बिट्टू पावा, बांटी ग्रोवर, अरविंद रस्तोगी, सोनू बत्रा, नरेश अरोड़ा, सतीश, साधुराम श्रीवास्तव, विशाल, मंगल मौजूद रहे।

पुलिस अधीक्षक ने ली परेड की सलामी, किया निरीक्षण

शाहजहांपुर (लोक पहल)। पुलिस अधीक्षक अशोक कुमार मीणा ने पुलिस लाइन में परेड की सलामी ली। परेड का संचालन क्षेत्राधिकारी नगर लाईन बी.एस वीर कुमार ने किया। इसके बाद पुलिस अधीक्षक श्री मीणा ने परेड में उपस्थित समस्त पुलिसकर्मियों को शारीरिक व मानसिक रुप से फिट रहने हेतु परेड ग्राउण्ड में दौड़ लगवाई। साथ ही टोलीवार पुलिसकर्मियों का टर्न आउट चेक करते हुए सम्पूर्ण ड्रिल की कार्यवाही करवाई। परेड के पश्चात पुलिस अधीक्षक ने पुलिसकर्मियों की पीआरवी गाडियों, सीपीसी कैण्टीन व मैस आदि का निरीक्षण किया एवं सम्बन्धित को साफ–सफाई के साथ साथ अन्य निर्देश भी दिए। इस दौरान सीओ सिटी बी.एस वीर कुमार, प्रतिसार निरीक्षक सतीश चन्द्र एवं अन्य अधिकारी कर्मचारीगण उपस्थित रहे।

ब्लैक स्पॉट एरिया में कैबिनेट मंत्री सुरेश खन्ना ने किया पौधारोपण

ब्लैक स्पाट एरिया को ब्यूटी स्पाट एरिया में विकसित करने से आमजन को होगी सुविधा : सुरेश खन्ना

लोक पहल

शाहजहांपुर। सघन वृक्षारोपण के क्रम में नगर निगम की ओर से नगर क्षेत्र के जिला अस्पताल के पास स्थित ब्लैक स्पॉट एरिया को ब्यूटी स्पॉट एरिया में विकसित किये जाने के लिए वृहद पौधारोपण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि वित्त एवं संसदीय कार्य मंत्री सुरेश कुमार खन्ना, महापौर अर्चना वर्मा व नगर आयुक्त संतोष कुमार शर्मा ने वृहद स्तर पर विकसित स्थल पर विभिन्न प्रजातियों के पौधों को रोपित किया। इस अवसर पर मंत्री सुरेश खन्ना ने कहा कि इस ब्लैक स्पॉट एरिया को ब्यूटी स्पॉट एरिया में विकसित करने से आमजन को सुविधा होगी, तो वही किए गए सघन पौधारोपण से भविष्य में

छाया तथा शुद्ध आक्सीजन की प्राप्ति भी होगी। नगर आयुक्त संतोष शर्मा ने बताया कि इस स्थल को पार्क के रूप में विकसित किया जायेगा एवं सघन पौधारोपण के क्रम में जामुन, कछनार, नीम, पीपल, आंवला आदि प्रजातियों के पौधों को रोपित किया गया है। इस दौरान राज्य सफाई कर्मचारी आयोग के अध्यक्ष सुरेंद्रनाथ वाल्मीकि, प्रभागीय वनाधिकारी प्रखर गुप्ता, अपर नगर आयुक्त एस के सिंह, महाप्रबंधक जल सौरभ श्रीवास्तव, सहायक अभियंता जलकल प्रेमचंद्र आर्य, ब्लॉक प्रमुख राजाराम वर्मा, पार्षद मनीष गुप्ता, स्वच्छता प्रभारी अल्पना श्रीवास्तव, पूजा पांडेय, रेयान इंटरनेशनल स्कूल की प्रधानाचार्य उषा अग्रवाल एवं स्कूल के बच्चों एवं आमजन द्वारा सक्रिय सहभागिता की गई।

शरद और कनक बने मिस्टर एवं मिस फेयरवेल

एस एस कालेज में भौतिक विज्ञान विभाग में विदाई समारोह का आयोजन

लोक पहल

शाहजहांपुर। स्वामी शुकदेवानंद महाविद्यालय के भौतिक विज्ञान विभाग में एमएससी फाइनल ईयर के विद्यार्थियों का विदाई समारोह आयोजित किया गया। कार्यक्रम में विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. आर के आजाद ने कहा कि इस कार्यक्रम में प्रसन्नता एवं दुःख दोनो तरह के संवेगों का समावेश है। महाविद्यालय के उपप्राचार्य डॉ अनुराग अग्रवाल ने कहा कि पढ़ाई की तो एक सीमा हो सकती है किन्तु सीखने की प्रक्रिया जीवनपर्यंत चलती रहती है। भौतिक विज्ञान विभागाध्यक्ष शिशिर शुक्ला ने अपनी स्वरचित कविता के द्वारा कार्यक्रम में भावुकता भरी। विभाग के नवागंतुक शिक्षकों राजनंदन सिंह राजपूत एवं हर्ष पाराशरी ने कहा कि विद्यार्थी केवल महाविद्यालय परिसर को छोड़ रहे हैं। भौतिकी के क्षेत्र में उनकी किसी भी तरह की सहायता हेतु पूरा विभाग सदैव तत्पर रहेगा। कार्यक्रम में जूनियर एवं सीनियर विद्यार्थियों के द्वारा विभिन्न प्रस्तुतियां दी गईं जिनके आधार पर शरद अवस्थी को मिस्टर फेयरवेल एवं कनक सिंह को मिस फेयरवेल घोषित किया गया। कार्यक्रम का संचालन सौम्या पाल एवं एकता सैनी ने संयुक्त रूप से किया। कार्यक्रम में सत्येंद्र कुमार सिंह, नितिन शुक्ला, अमित गंगवार, चंदन गिरी गोस्वामी, सुधाकर गुप्ता, देवेंद्र कुमार, रजनीश दीक्षित आदि उपस्थित रहे।

डा. बरखा सक्सेना के निर्देशन में हुए लघु-शोध

लोक पहल

शाहजहांपुर। एसएस कॉलेज की कला संकाय के अंग्रेजी की सहायक आचार्या डॉ. बरखा सक्सेना के निर्देशन में स्नातकोत्तर अंग्रेजी की दो छात्राओं ने लघु- शोध कार्य पूर्ण किया है। साक्षी सिंह ने "प्लेयर्स इन अ स्टॉर्म- क्लाइमेट एंड पॉलिटिकल माइग्रेंट्स इन द टेंपेस्ट एंड ऑथेलो" तथा अर्जुमंद ने

"दलित फेमिनिज्मः ए क्रिटिकल एंड इंटेरसेक्शनल एनालिसिस" शीर्षक से अपने लघु-शोध कार्य पूर्ण किये। दोनों छात्राओं को महाविद्यालय के उप- प्राचार्य प्रो. अनुराग अग्रवाल तथा डॉ.बरखा सक्सेना ने उनके लघु शोध प्रबन्ध प्रदान किए। डा. बरखा के निर्देशन में प्रथम बार लघु-शोध कार्य किये जाने हेतु महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो.आर.के.आजाद, प्रो.आलोक मिश्रा, प्रो. शालीन कुमार सिंह आदि शिक्षकों ने हर्ष व्यक्त किया और उन्हें बधाई दी।

मानसून में जाएं इन खूबसूरत जगह पर लें बारिश का मजा

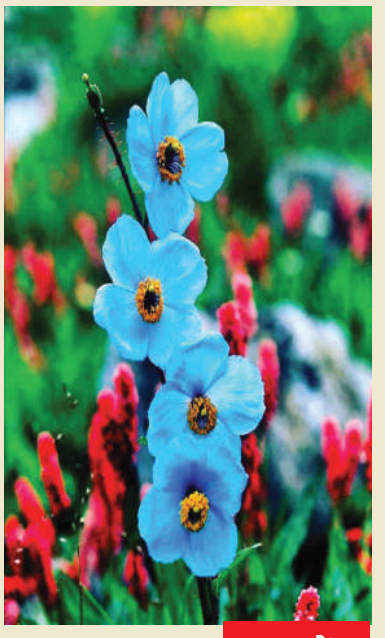

मानसून जारी है। इस मौसम में कभी भी बारिश हो जाती है। बारिश का मौसम कई लोगों को पसंद होता है लेकिन जब इसी बारिश में घर से बाहर घूमने के लिए निकलना हो तो अक्सर ही कई तरह की परेशानियों का सामना करना पड़ जाता है। घूमने का शौक रखने वाले लोग मानसून में चाहकर भी सफर की योजना नहीं बना पाते हैं, क्योंकि बारिश के कारण पहाड़ों पर लैंडस्लाइड या रास्ते बंद होने की समस्या होने की आशंका बनी रहती है। हालांकि पहाड़ों की बारिश देखने के लिए लोग उत्साहित भी रहते हैं। ऐसे में जो लोग मानसून में पहाड़ों की बारिश का मजा लेना चाहते हैं, वह ऐसी जगहों का चयन कर सकते हैं, जहां की खूबसूरती बारिश में अधिक बढ़ जाती है और सफर आसानी से किया जा सकता है। ध्यान रखें कि बारिश के मौसम में ऐसे हिल स्टेशन पर जाने से बचें, जो दुर्गम रास्तों से होते हुए जाता हो। अधिक ऊंचाई वाले पहाड़ी क्षेत्रों पर भी न जाएं। यहां आपको मानसून में घूमने के लिए कुछ खूबसूरत जगहों के विकल्प दिए जा रहे है, जहां की खूबसूरती बारिश में दोगुनी हो जाती है।

धर्मशाला, हिमाचल प्रदेश

हिमाचल प्रदेश के कांगड़ा जिले में स्थित धर्मशाला बहुत खूबसूरत पर्यटन स्थल है। मानसून के मौसम में धर्मशाला की प्राकृतिक सुंदरता और हरियाली दोगुना बढ़ जाती है। धर्मशाला में तिती संग्रहालय, कालचक्र मंदिर, कांगड़ा घाटी, युद्ध स्मारक, एचपीसीए स्टेडियम घूम सकते हैं।

फूलों की घाटी, उराखंड

उराखंड में वर्ल्ड हेरिटेज साइट का दर्जा प्राप्त फूलों की घाटी मानसून में घूमने की सबसे अच्छी जगहों में से एक है। बारिश का पानी जब इस जगह पर गिरता है तो रंग बिरंगे फूल खिल उठते हैं। फूलों की घाटी हिमालय की सबसे ऊंची घाटी में से एक है। मानसून में लावर वैली की यात्रा के लिए जाएं तो यहां एशियाई काले भालू, हिम तेंदुए और कई लुप्तप्राय जानवर भी देखने को मिल सकते हैं।

कौसानी, उराखंड

उराखंड में कौसानी नाम का एक छोटा सा गांव है, जो अपनी प्राकृतिक सुंदरता के लिए काफी पसंद किया जाता है। मानसून में यहां बादल घरों के ऊपर तक जाते हैं। नजारा एकदम स्वर्ग के समान नजर आने लगता है। मानसून में कौसानी की यात्रा कर सकते हैं। यहां ट्रेकिंग कर सकते हैं, साथ ही गांधी आश्रम, रुद्रधारी फाल्स और गुफाएं, चाय के बागान, नाशपाती के फार्म और बैजनाथ मंदिर आदि घूम सकते हैं। कौसानी में मध्यम मात्रा में वर्षा होती है, जो सफर के लिए उपयुक्त मौसम रहता है। यह अल्मोड़ा जिले से 53 किलोमीटर दुरी पर उर में स्थित है। यह भारत का एक खूबसूरत पर्वतीय पर्यटक स्थल है। यह स्थान हिमालय की सुन्दरता के दर्शन कराता पिंग्नाथ चोटी पर बसा है और साथ ही साथ इस स्थान से बर्फ से ढकी नंदा देवी पर्वत की चोटी का नज़ारा बड़ा भी अत्यधिक मनमोहक प्रतीत होता है।

उदयपुर, राजस्थान

दिल्ली एनसीआर से करीब राजस्थान का उदयपुर शहर है, जो अपने पर्यटन स्थलों के लिए मशहूर है। उदयपुर में मानसून के महीने में आना बेहद मजेदार अनुभव करा सकता है। अरावली पहाड़ी पर बसे इस शहर को झीलों का शहर भी कहते हैं। यहां नौका विहार कर सकते हैं। साथ ही सिटी पैलेस, पिछोला झील, मानसून पैलेस, फतेह सागर झील, गुलाब बाग और मोती मगरी घूम सकते हैं।

सम्पादकीय

चन्द्रयान-3 मिशन संभावनाओं का आकाश

ब्रह्माण्ड केवल जिज्ञासा का विषय नहीं रह गया है। बल्कि विज्ञान ने इसकी संभावनाओं को तलाशना शुरू कर दिया है। विज्ञान अब दूसरों ग्रहों पर मानव जीवन की तलाश करने की होड़ में है। सौर मण्डल के ग्रहों में चन्द्रमा पर जीवन की संभावनाओं का काफी अध्ययन हो चुका हैं लेकिन उसके बहुत सारे रहस्य अभी खुलने बाकी है। इसी को लेकर दुनिया के तमाम देश अपने अंतरिक्ष यान चन्द्रमा पर भेजते रहते है। भारत में इसरो ने श्रीहरिकोटा स्थित सतीश धवन स्पेस सेंटर से अपने चंद्रयान–3 को चांद के लिए रवाना कर दिया और इसके साथ ही आम भारतीयों ने 23–24 अगस्त का इंतजार शुरू कर दिया है, जब इसे चांद की सतह पर उतरना है। पिछला मिशन यानी चंद्रयान–2 हर चरण को सफलतापूर्वक पार करने के बाद इसी में नाकाम हो गया था। सॉफ्ट लैंडिंग करने के बजाय वह तेजी से चांद की सतह से जा टकराया और क्षतिग्रस्त हो गया। बड़ी बात यह कहिए कि न तो वह नाकामी हमारे मनोबल को कमजोर कर सकी और न ही उसने हमारे अंतरिक्ष कार्यक्रम की संभावनाओं को प्रभावित किया। यह सही है कि चंद्रयान–2 के बाद चंद्रयान–3 को रवाना करने में चार साल लगे, जिसे बहुत कम नहीं कहा जा सकता। बहरहाल, हमारे संकल्प के सबूत के तौर पर चंद्रयान–3 अंतरिक्ष में जा चुका है। निश्चित रूप से इस मिशन की कामयाबी काफी महत्वपूर्ण है, लेकिन यह एक लंबे सिलसिले की बस शुरुआत है। चांद पर इसकी सफल सॉफ्ट लैंडिंग भारत को उन देशों के क्लब में सम्मानपूर्ण प्रवेश देगी जिसके अभी सिर्फ तीन सदस्य हैं– अमेरिका, रूस और चीन। भारत ऐसा करने वाला चौथा देश होगा। लेकिन इससे बड़ी बात यह है कि यह मिशन इसरो के आगामी अंतरिक्ष अभियानों का रास्ता साफ करेगा।

सूर्य के अध्ययन के लिए आदित्य एल इसी साल लॉन्च किया जाना है। पृथ्वी के वातावरण और उसकी सतह के अध्ययन के लिए अमेरिका के साथ एक जॉइंट मिशन 2024 में तय है और अंतरिक्ष में भारत का पहला मानव मिशन गगनयान 2025 में छोड़ा जाना है। ध्यान रहे, इसी साल 21 जून को भारत ने अमेरिका की अगुआई वाले संयुक्त चंद्र अभियानों से जुड़े आर्टेमिस समझौते पर हस्ताक्षर किया है। इससे जहां भारत को स्पेस टेक्नॉलजी में अमेरिकी महारत का फायदा मिलेगा, वहीं इसरो के कॉस्ट इफेक्टिव लॉन्च फैसिलिटी का भी बेहतर इस्तेमाल सुनिश्चित किया जा सकेगा। यही नहीं, समझौते में शामिल अन्य देशों – फ्रांस, जापान और ऑस्ट्रेलिया– के साथ भी करीबी सहयोग का मौका मिलेगा। इस बीच देश में स्पेस एक्सप्लोरेशन का जो इकोसिस्टम विकसित हुआ है, उसे भी नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। गौर करने की बात है कि चार साल पहले यानी चंद्रयान–2 लॉन्च किए जाते समय देश में स्पेस सेक्टर की मात्र 10 स्टार्टअप कंपनियां थीं। अब इनकी संख्या बढ़कर 140 हो गई है। इसरो ने सुविचारित ढंग से स्पेस सेक्टर में प्राइवेट कंपनियों के लिए गुंजाइश बनाई है जिसका एक फायदा यह भी है कि वह अब अपनी ऊर्जा स्पेस साइंस से जुड़े कोर एरिया में केंद्रित कर सकेगा। जाहिर है यह नया क्षेत्र भारत के सामने खुल रहा है और उसे इसमें बहुत आगे जाना है। चन्द्रयान मिशन की कामयाबी एक नया कीर्तिमान रचेगी। किसी भी देश की ताकत केवल अर्थव्यवस्था, व्यापार और सामरिक शक्ति से ही नहीं आंकी जाती उसकी वैज्ञानिक और तनीकी उपलब्धियां भी इसका मानक होती है। भारत इस दिशा में कामयाबी हासिल करने की कगार पर है।

सर्पदंश को घातक व चुनौतीपूर्ण बनाते अंधविश्वास

शिशिर शुक्ला
शाहजहांपुर

पिछले कुछ दिनों से समाचार पत्रों में सर्पदंश से होने वाली दुर्घटनाओं की खबरें नियमित रूप से आ रही हैं। वस्तुतः मई से लेकर सितंबर तक का समय सर्पदंश की दुर्घटनाओं हेतु अनुकूलता से परिपूर्ण है क्योंकि प्रचंड गर्मी के कारण अधिकांश सर्प भूमि के अंदर बने अपने बिलों से बाहर आ जाते हैं। अधिकांशतः वे ऐसा शीतलता एवं आहार की तलाश में करते हैं। यही वजह है कि इस समयान्तराल में सर्प और मनुष्य के द्वारा एक दूसरे के रास्ते में आने की संभावना बढ़ जाती है। उपलब्ध आंकड़े यह बताते हैं कि प्रतिवर्ष भारत मे पचास लाख लोग सर्पदंश का शिकार हो जाते हैं। यद्यपि यह सभी दंश विषमय नहीं होते, इनमें कुछ शुष्क दंश भी होते हैं जिनसे मृत्यु की कोई संभावना नहीं होती। किंतु फिर भी प्रतिवर्ष एक अच्छी खासी जनसंख्या सर्पदंश के माध्यम से काल का ग्रास बन जाती है। गावों में तो इन दुर्घटनाओं के लिए कहीं बेहतर अनुकूल परिस्थितियां पाई जाती हैं, लिहाजा गांव के व्यक्तियों के लिए सर्पदंश कहीं अधिक घातक हो जाता है। धान की रोपाई व सिंचाई के दौरान, पशुओं को चारा खिलाने अथवा दूध दुहने के दौरान, खेतों का भ्रमण करने के दौरान प्रायः लोग सर्पदंश का शिकार हो जाते हैं एवं किसी परिचित या परिजन को खबर न लग पाने के कारण तड़प तड़प कर मर जाते हैं।

सर्पदंश के कारण प्रतिवर्ष होने वाली जनहानि एक गंभीर चुनौती का रूप लेती जा रही है। यहां पर एक बात विशेष रूप से उल्लेखनीय है कि सर्प एवं सर्पदंश को लेकर भारत में एक सीमा से अधिक अंधविश्वास एवं भ्रांतियां व्याप्त हैं। हमारे यहां सर्प को मारना पाप माना जाता है, और तो और नागपंचमी जैसे त्योहारों पर उसकी पूजा की जाती है एवं उसके दर्शन को शुभ माना जाता है। पुरानी मान्यताओं के साथ–साथ हिंदी फिल्मों ने भी सर्पों के विषय में बहुत सी बेबुनियाद बातों को भारतीय जनमानस के मन में बिठा दिया है, जैसे कि सर्प के द्वारा इच्छानुसार रूप धारण करना, नाग व नागिन के जोड़े में से एक को मार दिए जाने पर दूसरे के द्वारा बदला लिया जाना इत्यादि। भारत में सर्पदंश से होने वाली मौतों का एक प्रमुख कारण यह है कि अधिकांश लोग

अंधविश्वास के पाश में जकड़े होने के कारण उपचार के रूप में झाड़फूंक को प्राथमिकता देते हैं। झाड़–फूंक, जड़ी–बूटी एवं तंत्रमंत्र के चक्कर में वह समय बरबाद होता है जिसका एक एक मिनट पीड़ित व्यक्ति के लिए बहुत कीमती होता है। सत्य तो यह है कि विषैले सर्प के काटने के तुरंत बाद ही पीड़ित व्यक्ति के लिए मृत्यु का काउंटडाउन शुरू हो जाता है। मौत के मुंह से निकल पाना केवल और केवल तभी संभव है जब रोगी को शीघ्र से शीघ्र प्रतिविष उपलब्ध हो जाए। कोबरा (नाग), करैत, एवं रसेल वाईपर जैसे सर्प इस हद तक विषैले होते हैं कि इनके बारे में एक कहावत तक बन चुकी है, इनका काटा सुबह का सूरज नहीं देख पाता। जागरूकता एवं सतर्कता के अभाव में हमारे यहां के लोग झाड़–फूंक, तंत्रमंत्र, ओझा, नीमहकीम इत्यादि के चक्कर में पड़कर समय नष्ट करने के अलावा और कुछ नहीं करते। नतीजा यह होता है कि मरीज मौत के मुंह में समा जाता है।अक्सर ऐसा भी होता है कि जिस सर्प ने व्यक्ति को काटा है वह जहरीला नहीं होता किंतु दुर्घटना होते ही व्यक्ति इतना अधिक घबरा जाता है कि उसकी मृत्यु हृदयाघात से हो जाती है। यदि व्यक्ति न घबराया एवं परिजनों के द्वारा उसे किसी झाड़–फूंक करने वाले के पास ले जाया गया, तो व्यक्ति का जीवन बचाने का श्रेय बिना किसी वजह के ही झाड़–फूंक वाले को मिल जाता है, जबकि सच्चाई यह होती है कि उस दंश के कारण व्यक्ति की जान को कोई भी खतरा नहीं होता है। विषैले सर्प के द्वारा काटे जाने पर झाड़–फूंक के द्वारा बचने की कोई संभावना नहीं होती। उस स्थिति में केवल और केवल एक ही विकल्प है जो व्यक्ति को मौत से जिंदगी की ओर ले जा सकता है, और वह है समय रहते प्रतिविष मिल पाना। विश्व स्वास्थ्य संगठन के द्वारा एंटीवेनम को एक जरूरी औषधि के रूप में सूचीबद्ध किया गया है। इन गंभीर दुर्घटनाओं पर नियंत्रण करने का एकमात्र उपाय यह है कि जिले से लेकर छोटे छोटे स्तर तक और विशेषतरू गावों में एंटी वेनम की पर्याप्त उपलब्धता सुनिश्चित होनी चाहिए। साथ ही साथ जनसामान्य को इस बात से जागरूक किया जाना चाहिए कि सर्पदंश का एकमात्र इलाज प्रतिविष है, ताकि वे तंत्र मंत्र एवं झाड़–फूंक के चक्कर में पड़कर अमूल्य समय एवं जीवन से हाथ न धो बैठें। निस्संदेह यह एक ऐसी समस्या है जिसको खत्म करना तो मुश्किल है, किंतु परिस्थिति उत्पन्न होने पर यदि धैर्य एवं विवेक के साथ निर्णय लिया जाए तो इस गंभीर चुनौती एवं आपदा के दुष्प्रभावों को काफी हद तक कम किया जा सकता है।

शिक्षा बनी व्यापार

डा. पूर्णिमा श्रीवास्तव
जयपुर

योजनाएं योजनाएं योजनाएं? कितनी क्रियान्वित हुई? किन तक पहुंची? कितने लाभांवित हुएं? कितनी प्रारंभ होकर बंद हो गई? कुछ तो प्रारंभ होने से पहले ही खत्म हो गई। वास्तविकता देखी जाए तो आजादी के पहले हम सिर्फ तकनीकी विकास, व्यापार की नई नई विधाओं से अनजान थे, कौशल विकास क्षमता में देश हमेशा से आगे रहा है। कमी रही तो इन कौशलों को ओर विकसित कर देश को विकसित करने में इनके योगदान की, पहले हमारी कमियों का लाभ उठा कर इतने वर्षों तक हम ब्रिटिश शासन के गुलाम रहे, उसके पश्चात अज्ञानतावश भ्रष्ट राजनेताओं की भ्रष्ट विकासशील सोच के हो गए स्वयं की बुद्धि का उपयोग न करते हुए बस सुने–सुनाए साक्ष्यों पर विश्वास कर भेड़ चाल की तरह आंख मूंद कर सही गलत का विश्लेषण किए बिना सहयोग करने का दिखावा किए जा रहे हैं क्योंकि हमारे लिए तो सच वहीं है जो सौ झुठे बोल रहे हैं हमारे मस्तिष्क का विकास ही इतना ही हुआ है। पहले अंग्रेजों ने फुट डालो शासन करो की रणनीति अपना कर हमारी एकता को खंडित किया,अब विभिन्न प्रकार की राजनीतिक पार्टियां अपना उल्लु सीधा करने के लिए नई –नई योजनाएं लाकर विभिन्न प्रकार के लोभ प्रलोभन का झांसा देकर हमें अंदर से पूरी तरह से खोखला कर अपाहिज बनाने को तत्पर है उन्हें स्वयं भी इस बात का भान नहीं है कि उनके ये कृत्य भविष्य में कितनी गंभीर समस्या उत्पन्न करने वाले है।

मानव जीवन की आधारशिला है रोटी कपड़ा और मकान, और इन

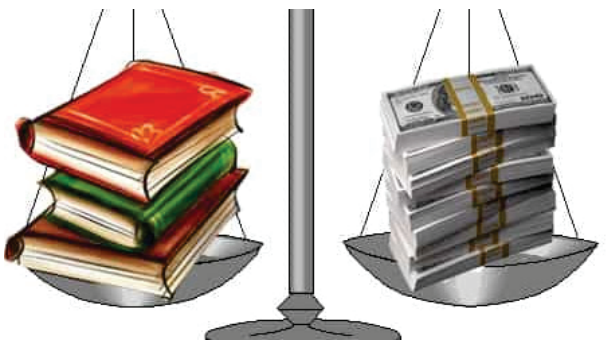

संसाधनों का उपयोग करने के समझ प्राप्त होती है शिक्षा से,जोकि व्यक्ति का सम्पूर्ण विकास करती है सही शैक्षणिक योग्यता कभी भी व्यक्ति को कमजोर नहीं होने देती है अपितु हर तरह की परिस्थिति में संयम से झुझने का हौसला प्रदान करती है, देश की भोली भाली जनता ने समझी परंतु भ्रष्ट राजनेताओं ने अपना उल्लु सीधा करने के लिए कैसे हमें हमारे इस विकास से वंचित करने का तरीका ढूंढ लिया और धीरे धीरे शैक्षणिक स्तर को इतना नीचे गिरा दिया की हमें भान भी नहीं होने दिया कि जिस तरह की शिक्षा प्रणाली प्राप्त कर हम स्वयं को शिक्षित कहते हैं वह शिक्षा कब व्यापार में बदल गई हमें पता ही नहीं चला, शिक्षा का मूल उद्देश्य कब पीछे छूट गया और ज्ञान की जगह अब कागज की डिग्रियों ने ले ली पता ही नहीं चला, आज शिक्षा के नाम पर हर गली मोहल्लों में शैक्षणिक संस्थान देखें जा सकते हैं, परंतु उनकी गुणवत्ता का मापदंड ज्ञान से नहीं सिर्फ शैक्षणिक संस्थान के नाम से प्राप्त कागज पर अंकित उपलब्धि से है। आज यह स्थिति है कि उच्च शैक्षणिक योग्यता को प्राप्त करने के लिए शैक्षणिक ज्ञान की नहीं हमारी आर्थिक स्थिति मजबूत होने की आवश्यकता है उसकी सहायता से कोई भी शैक्षणिक योग्यता किसी भी उच्च नामचीन संस्थानों से प्राप्त की जा सकती है। कब ष्गुरु देवो गुरु ब्रह्मा गुरु साक्षात् परब्रह्म ष के गुरु का स्थान एक व्यापारी ने ले लिया पता ही नहीं चला।

सुरेखा सीकरीः अभिनय की जादूगरनी

अनिरुद्ध कुमार सुधांशु

आज असाधारण और महान अभिनेत्री सुरेखा सीकरी की दूसरी पुण्यतिथि है। उनकी स्मृतियों को सादर नमन। मंच हो या धारावाहिक या बड़ा परदा, हर जगह सुरेखा सीकरी जी अभिनय की जादूगरनी थीं। उनकी आंखों की चमक और तेजतर्रार पैनापन अद्भुत था। सुरेखा जी की संवाद डिलीवरी, हावभाव, सधी गूंज भरी आवाज का माड्यूलेशन और किरदारों की समझ विलक्षण थी। अभिनय की बारिकियां, गम्भीरता भरी कार्यशैली, ऊर्जावान व उत्साहित जीवंतता और सरल स्वभाव, उनके व्यक्तित्व की खासियत थी।

सुरेखा जी ने 1971 में एनएसडी से स्नातक की उपाधि प्राप्त करने के बाद नाट्य विद्यालय के रंगमंडल के साथ काम किया। सुरेखा सीकरी के नाटकों में मुख्यमंत्री, संध्या छाया, अंधा युग, आधे अधूरे, अंकल वान्या, बेगम का तकिया, लुक बेक इन एंगर, थ्री सिस्टर्स, चेरी ऑर्चाड, देवयानी का कहना है, महाभोज आदि प्रमुख है। राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय के रंगमडल में उन्होंने लगभग पन्द्रह साल सक्रिय काम किया। इससे बाद कुछ व्यक्तिगत कारणों से शहर बदला और मुंबई चली गईं। मुम्बई जाने के बाद धीरे धीरे सुरेखा जी सिनेमा का हिस्सा बनी, बाद में धारावाहिकों के माध्यम से उन्होंने जबरदस्त लोकप्रियता हासिल की। दिग्गज अभिनेत्री सुरेखा सीकरी जी ने अपनी बहुआयामी प्रतिभा की बदौलत तमस से लेकर मम्मो, बधाई हो, किस्सा कुर्सी का, सलीम लंगड़े पे मत रो, सरदारी बेगम, सरफरोश, जुबैदा जैसी फिल्मों और टीवी सीरियल श्बालिका वधूश तक हर किरदार को यादगार बना दिया।

क्या सीखना था.. क्या सीख लिए!

व्यंग्य

रेखा शाह आरबी बलिया

दुनिया रोज बदलती जा रही है पहले से भी और ज्यादा हम लोग विकसित होते जा रहे हैं और इंसान तो कुछ ज्यादा ही विकसित हो चुका हैं। पहले हममें सिर्फ इंसानों वाले गुण हुआ करते थे अब तो जानवरों वाले गुण भी इंसानों के भीतर आते जा रहे हैं। अब इसे विकास नहीं कहा जाएगा तो क्या कहा जाएगा और क्या कहा जा सकता है ! पहले हम कुत्तों को अपनी सहूलियत के लिए पालते थे सिखाते थे प्रशिक्षित करते थे और कुत्तों ने भी पूरी लगन और तन्मयता से सीखा और जानवर होकर भी कर्तव्य और निष्ठा के उच्च मानक स्थापित करके कहीं–कहीं पर अपने को मनुष्य से भी श्रेष्ठ साबित किया।

पहले भी हमारे बड़े बुजुर्ग कहते थे हमें जानवरों से उनकी दिनचर्या के बारे में शिक्षा लेनी चाहिए लेकिन इंसान ने सीखा भी तो क्या सीखा.. कुत्ते के जैसे टांग उठा कर मूत्र विसर्जन कहीं पर भी, इंसानों ने उनकी बुरी आदत सीखी और यह कुत्ते लैम्प पोस्ट ,गाड़ी ,अन्य किसी वस्तु का मूल्य और मान–सम्मान परवाह किए बिना कहीं पर भी पर मूत्र विसर्जन करते हैं। वैसे ही अभी हाल फिलहाल इंसान ने भी करना शुरू किया है। अब यह अलग बात है कि उसे लैंप पोस्ट या गाड़ी नहीं मिला तो इंसान के सिर को ही लैंप पोस्ट समझ बैठा और मूत्र विसर्जन कर दिया। वैसे कुछ सामंतवादी सोच वाले गरीब बेघर बेचारों को बहुत पहले से इंसान समझना छोड़ दिए थे.. वह तो इस बार सोशल मीडिया का कमाल है जिसने थोड़ा सा रायता फैला दिया।

लेकिन एक बात की बहुत ज्यादा खुशी है कि कुत्तों ने हम इंसानों से बहुत कुछ नहीं सीखा और ना ही सीख सकते हैं क्योंकि

वह इंसानों इतना नीचे नहीं गिर सकते। अभी भी वह है ईश्वर द्वारा बनाए नियमों का पालन करते हैं। तय समय पर सोना, भूख लगने पर खाना, इत्यादि प्रकृति के नियम अनुसार करते हैं। उन्हें प्रकृति से उतना ही चाहिए जितनी उनकी जरूरत है और जितनी भूख उनको ईश्वर ने दिया है लेकिन इंसानों की भूख से तो पूरी पृथ्वी डांवाडोल एवं अस्त–व्यस्त त्रस्त है और सारा जीव जगत खतरे में एवं भयभीत है।

जरा सोच कर देखिए रोंगटे खड़े हो जाएंगे अगर कुत्ते इंसानों के सारे गुण सीख ले तो क्या हालत इस दुनिया की हो सकती है। हम इंसान क्या–क्या नहीं करते हैं पूरे के पूरे अवगुणों की दुकान है और इस दुकान में छल–कपट, झूट–बेईमानी , रेप –मर्डर, चोरी– चकारी डबल फेस सब कुछ तो इस दुकान में भरपूर मात्रा में मौजूद है । यह सारे इंसानों के गुण हैं अगर देश के सारे कुत्ते यह गुण सीख ले तो इंसानों का रहना मुहाल हो जाएगा। धरती पर पनाह मांगते फिरेंगे। लेकिन शुक्र है ऐसा होना संभव नहीं है लेकिन हास्यप्रद बात यह है कि हम इंसानों ने कुत्तों से सिर्फ उसकी बुरी आदत सीखी कहीं भी किसी भी जगह मूत्र विसर्जन किसी भी वस्तु पर कर देना. जबकि उसमें सीखने के लिए हजारों अच्छे गुण थे वफादारी निष्ठा अपनों से प्रेम करना, कुत्तों का संतोषी स्वभाव, उनकी वीरता उनका सदैव सतर्क रहना। याद रखें यह सारे सुंदर गुण कुत्तों के हैं और इंसान चाहे तो कुत्तों से अनेक अच्छे गुण यह सीख सकता है और उसे यह सीखने की बहुत ज्यादा जरूरत है। एक कुत्ता जब किसी के द्वारा आधी रोटी भी खा लेता है तो उसे काटता नहीं है अपितु सदैव उसका वफादार बना रहता है जबकि इंसान अक्सर जिस पेड़ की छांव में रहता है उसी को काटने में लगा रहता है।

कुत्तों के पास एक पूछ भी होती है जिसके बारे में कहावत है 'सौ बरस नली में रखिए फिर भी कुत्ते की पूंछ टेढ़ी की टेढ़ी ही रहेगी' यह कहावत यदि कुत्तों पर लागू होती है तो इंसानों पर भी यह कहावत पूरी तरीके से लागू होती है। इंसान की औलाद चाहे चाहे कितने भी सुंदर संयमित निष्ठावान जीव जगत के सानिध्य में रह ले पर सीखेगा इंसानों वाली उटपटांग हरकतें ही और सब को परेशान ही करेगा।

मिसाल

यह जिंदगी है कोई मजाक नहीं, क्या सही है क्या गलत है।
इस पर थोड़ा घना विचार हो, सच की चादर में लिपटी।
ज्ञान की रोशनी से जो जगमगाए, उस डगर पर अब पाव हो।
बिना डरे निर्भीक होकर लड़ना है, अपने विकारों से अपने
दुखों से अपने अवसादों से, निकलना है नए विचार से।
साबित करना है अगर खुद को, आंधी तूफानों में भी डटना है।
चलना है जलते अंगार पर, अर्जुन सी नजर हो।
दृनिश्चयी बनकर भेदना है, सिर्फ अपने लक्ष्य को।
कमजोरियों से लड़ना भी है, जो तुम हो उसे स्वीकारना भी है।
थोड़ा सुधारना भी है, हवा महल से निकलकर।
तथ्यों के साथ जीना है, झूठ की नीव अब स्वीकार नहीं।
अंधेरी कोठरी में अब सिसकना नहीं है, कर्म पथ पर अग्रसर होकर
कांटों भरी राह में, फूल बिखेरना है।
जगाकर खुद को, नए आयाम में चमकना है।
खुशी के हर रंग को, दुनिया में उकेरकर।
जीवन में कुछ मिसाल हो, स्वार्थ को झटककर,
परमार्थ की राह पर चलना है, हम क्यों है यहां इस धरती पर।
इसको थोड़ा विचारना है।

राजश्री सिन्हा
सोफिया (बुल्गारिया)

पर उपदेश कुशल बहुतेरे...

रानी प्रियंका वल्लरी
हरियाणा

उपदेश देना हर किसी को अच्छा लगता है। लेकिन सुनना कान को भाता नहीं। जबकि दूसरों को तो हम ऐसे समझाते हैं मानो उस व्यक्ति को विद्वान, वैभवपूर्ण बनाकर ही छोड़ेंगे। हमारे घर में हमारे बच्चे हमें सुने या ना सुने, मगर दूसरों को तो जाहिर करा ही देते हैं, जो हम कितने बड़े मनीषी हैं। प्रभु कृपा एक दिन बरस गई मेरे ऊपर, मनीषी से टकराना हुआ। बहुत ज्ञान दिये। उनके ज्ञान से अभिभूत हो मेरे मन में इनको गुरु बनाने का विचार आने लगा। यह विचार मेरे पूर्व के फैसले पर भारी था। हमने तो अपने जीवन में किसी को गुरु नहीं बनाने की फैसला कर रखी थी। प्रतिज्ञा टूट ना जाए। इन बातों से मैं बहुत चिंतित थी। मेरे पास तो देवव्रत की माँ गंगा भी नहीं जो मैं अनुनय विनय करके अपने धर्म की रक्षा करूँ। ऐसे विचलित मन में एक ख्याल आया। गंगा तो सबकी माँ हैं। मैं इन्हें ही साक्षी मानकर इनको ही मन की बात क्यों ना सुना दूं।

हमारे देश में तो रिवाज हैं मन की बातें करने और सुनाने की। हमारे प्रधानमंत्री जी भी तो मन की बात करते हैं। फिर ख्याल आया बचपन में बुम्बक नाई की कहानी सुनी थी। उसने भी सुन लिया था। राजा के सिर में दो सिंघ हैं। वह

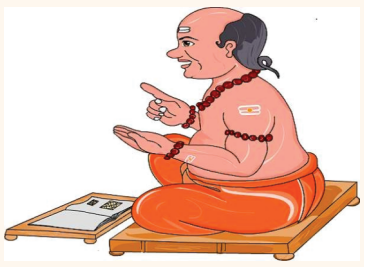

जबतक नहीं सुनाया तबतक उसका पेट चार कोश में फैल गया था। सुनाने के बाद वह सामान्य हुआ। लगे हाथ महाराज युधिष्ठिर की दिये हुए श्राप भी मनन हो आया। अब क्या था। अब तो बस सुनाना ही था। सुनाना प्रारंभ कर ही रही थी, तो मन में एक श्लोक याद हो आया।

विद्यां ददाति विनयं विनयाद् याति पात्रताम्।
पात्रत्वात् धनमाप्नोति दनात् धर्मं ततः सुखम्।।

यानी ज्ञान हमें विनम्र बनाता हैं। विनम्रता पाकर योग्यता आती हैं। और योग्यता से हमें धन प्राप्त होता हैं। जिससे हम धर्म के कार्य करते हैं, और हमें सुख मिलता हैं। यह उपदेश श्री विष्णु पुराण में हैं। पर हम सब आम बोलचाल में एक दूसरे को उपदेश देने में कहीं चुकते नहीं। ऐसे भी किसी व्यक्ति को दे आते हैं जिनसे हम सब का आता–जाता कोई संबंध नहीं। और हम खुद भूल जाते हैं जो हम कर क्या रहें हैं। इतना सुनाने के बाद मैं अपना आसन समेट चुकी थी।

जीवन मंत्र है प्रार्थना

सफर की राह पर चलना आसान नहीं है,
मुश्किल वक्त में,
अक्सर रहते लोग परेशान हैं,
समय और काल में ही,
सही तरीके से सामंजस्य स्थापित करने की,
स्पष्ट और आसान जरूरत है,
यही जिन्दगी की हकीकत है,
हमें सम्हलकर रहने के लिए,
मन को आनंदित कर रखना होगा,
प्रार्थना करते हुए आगे बढ़ने में,
हमेशा हमें ध्यान देना होगा,
प्रार्थना करते हुए चिन्तन करना होगा,
यह मन को स्थिर और शान्त रखता है,
क्रोध पर नियंत्रण करता है,
यह एक सात्विक विचार है,
इससे स्मरण शक्ति बढ़ती है,
चेहरे पर मायूसी की जगह,
चेहरे की चमक बढ़ती है।
सकारात्मक उर्जा का विकास करते हुए,
मन को आनंदित करता है,
मन को निरोगी बनाता है।
यह रक्त संचार को दुरुस्त करने में,
भरपूर मदद करता है,
प्रार्थना करने हेतु प्रार्थना स्थल तक,
सदैव जाने के ऐवज में,
शरीर को व्यायाम करने का अवसर देता है,
ध्यान केन्द्रित करने में हरवक्त,
तेज रफ्तार से भरपूर मदद करता है,
एकाग्रता और सृजन को,
मजबूती से पकड़ कर रखता है,
तनाव को बड़ी शिद्दत से दूर करता है,
लोग अच्छा और बेहतर महसूस करते हैं,
तनाव से निपटने में निपुण बनते हैं,
बीमारियों से युद्ध करते हुए,
स्वस्थ जीवन शैली की,
यह एक आन बान और शान है,
जीवन में खुशहाली लाने का ,
एक सर्वोत्तम निदान है।

डा. अशोक, पटना

आया सावन

आया सावन,
सखि! हुलसे मन।
पीहर चलके
मिल सखियों से।
कैसे हैं वो
कह सखियों से।
बढ़ जाती है
दिल की धड़कन।
फिर बगिया में
झूला झूलें।
पेंग बढ़ाकर
नभ को छू लें।
देखेंगी छू
सखियाँ कंगन।
पिय की बाहें
ये मधुरिम दिन।
दूर रहूँगी
कैसे इन बिन।
कैसे छोड़ूँ
बोलो साजन।

ज्ञानेन्द्र मोहन 'ज्ञान'

खुश रहो तुम

खुश रहो तुम है तुम्हें अब,
छोड़ जाने की इजाजत।
चाह थी जो साथ रहने की,
न अब पूरी करूँगा।
क्या करोगे जानकर भी,
मैं जियूँ या मैं मरूँगा।
अश्क तुमको अब नहीं,
बिल्कुल बहाने की जरूरत।
अब न छेड़ेगा तुम्हें,
ले नाम कोई यार मेरा।
भूल जाएंगे सभी,
तुम थे कभी को प्यार मेरा।
मत करो परिवार से,
मेरे लिए कोई बगावत।
सिर्फ सहमति पर तुम्हारी,
है पिता की आस अटकी।
इसलिए मुझको भुलाकर,
अब करो वह बात पक्की।
जिस तरह तुम चाहते थे,
दे न पाया मैं मुहब्बत।

विकास सोनी 'ऋतुराज'

याद करना

बहुत कुछ कहना है,
बहुत कुछ लिखना है,
पता नहीं क्या होना है,
उल्टी गिनती शुरू है!
कुछ कहना है दिल की बातें,
कुछ कहना है मन की बातें,
नहीं किसी को ठगना है,
अनुभव अपना लिखना है!
एक बात समझाना है,
ईमानदारी का पर्याय,
गरीबी है, मेरा यह कटु,
अनुभव, सत्य कहना है!
चला जाऊँगा एक दिन,
याद आऊँगा सबको,
किताबों के पन्नों में रहूंगा,
साहित्य की सरिता में दिखूँगा!
डोलती नैया की पतवार हूँ,
ऊर्ध्व स्वाँसों में जीने का प्रयास हूँ,
आज हूँ, कल नहीं तुम्हारे बीच हूँ,
याद करना, सिरफिरा बब्बा मैं जो कहूँ!!

सतीश 'बब्बा' चित्रकूट उ.प्र.

झूला गीत

झूला के दिन आये सखीरी,
झूला कौन झुलाये,
झूला कौन झुलाये,!!
बरसे मेघ दामिनी दमके,
थर–थर मोरा जियरा धडके,
धानी चुनरी ओढ़ मैं थिरकूँ,
मेहदी अंग रचाये, झूला कौन झुलाए,
झूला कौन झुलाए,!!
कागा सजन संदेशा लाओ,
घी, गुड, चावर चुन–चुन खाओ,
रीत न जानूं, गीत न जानूं,
हिरदे सजन समाये,झूला कौन झुलाए,
झूला कौन झुलाये,!
बरखा सुखन सुहानी आई,
सुधियाँ संग पुरानी लाई,
मैं बावरिया पाती बाँचू,
बैठी दियन जराए, झूला कौन झुलाए,
झूलाकौन झुलाए।।

सरिता बाजपेयी 'साक्षी'

सासों की वैरायटी करे कमाल

पूजा गुप्ता
मिर्जापुर उ.प्र.

दुनियाँ भर की रहस्यमयी पहेलियों में से एक पहेली सास भी है। किस्म–किस्म की सासें अपने अपने स्वभाव की मालकिन है। इनसे पार पाना भी मुश्किल है सीधी–सादी बहुओं के लिए। विविधता से परिपूर्ण हमारे देश में तरह–तरह के अजूबे पाए जाते हैं। हमारी हर बात निराली होती है। लेकिन हमारे देश की संस्कृति में एक अजूबा चरित्र ऐसा भी है, जो भारत की विविधताओं में एकता का गुरुत्व भार अपने कंधों पर सदियों से ढोता आ रहा है। इस अद्भुत चरित्र का नाम है सास। हम अन्य भाषाओं में पति की माँ कह सकते हैं। यह चरित्र सरल भी है और जटिल भी जलेबी की तरह सीधी भी है, तो करेले की तरह मीठी भी है, यह नमक की तरह खारी भी है। यदि दुनियाँ विभिन्न पहेलियों की बात की जाए तो सास की पहेली सबसे ज्यादा जटिल आती है। बीजगणित के जटिल समीकरण आसानी से हल हो सकते हैं, लेकिन सास बहू के समीकरण को समझना और हल करना हम जैसे तुच्छ प्राणी के बस की बात नहीं है। सास बहू का विवाद हर गृहस्थी को सामना करना पड़ता है।

सास शब्द निश्चय ही श्वास से जुड़ा होगा। हमारी अनुसार सास की सरल परिभाषा यह हो सकती है कि सास वह होती है जो सांसो को नियंत्रित करने का जिम्मा उठाती है। सास बहू के संबंध गृहस्थी की नींव हैं। उपयोगिता की दृष्टि से सकारात्मक सोच वाली सासें अपनी बहू के लिए एक आदर्श और मजबूत संबल होती है, तो नकारात्मक भूमिका वाली सासें गृहस्थी का बंटाधार करने के लिए जगतप्रसिद्ध है। सासें चाहे तो घर की बागडोर को अच्छी तरह हैंडल कर सकती है तथा नई नवेली बहू के लिए आदर्श शिक्षिका ही साबित हो सकती है, जिसमें सारे परिवार का उद्धार निहित है।

प्रथम श्रेणी की सासों की बात अगर करें तो ये श्बड़बड़श करने वाली होती है। इस श्रेणी की सासों को 'बकबक सासें' कहा जाता है। उनका पहला और आखरी काम होता है बहुओं के क्रियाकलापों पर टिप्पणी करना। ऐसी सासें जब चाहे तब तिल का पहाड़ बनाकर विस्फोट करा देती है। उनका खून गर्म होता है। बहुओं की छोटी से छोटी बात पर भी पैनी नजर रखना उनकी सामान्य आदत होती है। मीनमेख निकालने की कला में वे दक्ष होती है। संभवतः इसी क्रिया द्वारा उनका भोजन पचता है। ऐसी सासें बहू के दोषों का बखान करने में कभी नहीं थकती। उनकी अपनी बहुओं से हमेशा तनातनी चलती रहती है।

द्वितीय श्रेणी की सासों को हम श्सौम्य सासेंश कहते हैं। ये गऊछाप होती है। इनकी प्रकृति बहू पर दोष मढ़ने की नहीं होती है, बल्कि उन्हें प्यार से समझा कर उनकी गलतियों को सुधारने वाली होती है। ऐसी सांसों का अकाल पड़ा होता है। यदि इन सासों का पाला तेजतर्रार बहू से पड़ जाए तो दहेज के झूठे इल्जाम में हवालात की गौशाला में भी वह बँधी नजर आ सकती हैं। तृतीय श्रेणी की सासें श्पहलवान टाइपश रहती हैं। वह अपने बाहुबल के प्रदर्शन का अवसर कभी नहीं छोड़ती है, मौका मिलते ही थप्पड़ जड़ना उनका सबसे पसंदीदा काम होता है, लेकिन वरीयता क्रम में पिछड़ी इन सासों की लोकप्रियता आधुनिक युग में बड़ी तेजी के साथ घटती जा रही है। वर्तमान कानून और प्रतिबंध उनकी वंशवृद्धि में बड़ी रुकावट पैदा कर रहे हैं। एक जमाना था जब ऐसी सासों ने बॉलीवुड की फिल्मों में धाक जमाई हुई थी। ललिता पवार को ऐसी सास के अभिनय ने ही लोकप्रियता की बुलंदियों पर पहुंचा दिया था। ऐसी सासों से बहू बेटे ही नहीं बल्कि पूरा मोहल्ला डरा करता था। लेकिन अब ऐसी रौबदार बाली सासों के दिन लद गए हैं।

चतुर्थ श्रेणी में 'चुगलबाज सासों' को रखा गया है। उनका प्रिय शौक चुगलबाजी करना होता है। यह सासें घर परिवार की बातें मीडिया की तरह जन साधारण तक पहुंचाने में कार्य करती हैं। उनकी रिपोर्टिंग के आगे इलेक्ट्रॉनिक अथवा प्रिंट मीडिया भी फेल साबित होती है। आज बहू कब सोकर उठी अथवा सब्जी में नमक ज्यादा था या कम जैसी महत्वपूर्ण खबरें हजारों मील दूर बैठे रिश्तेदारों को सहज ही पता चल जाती है। पंचम श्रेणी 'फरमाइशी सासों' की है। कारण उनकी फरमाइशें कभी पूरी नहीं होती है। बहुओं से उनकी फरमाइशें हमेशा चलती रहती है। ऐसी सासें दहेज से कभी संतुष्ट नहीं दिखती। उन्हें पूंजीवादी सासें भी कहा जा सकता है, क्योंकि उनकी सारी चिंता पूंजी पर केंद्रित रहती है। षष्ठी प्रकार की सासों को 'समाजवादी सासें' कहना उचित होगा। उन्हें हमेशा समाज की चिंता सताती रहती है। उन्हें डर सताता रहता है कि पता नहीं बहू कब उनकी प्रतिष्ठा की नाक समाज में कटवा डाले। किसी ने देख लिया तो लोग क्या कहेंगे? जैसे जुमले उनके मुंह पर हमेशा चढ़े रहते हैं। ऐसी सासें हमेशा अपनी बहुओं के कृत्यों और उनके समाज पर पड़ने वाले प्रभाव का मूल्यांकन विश्लेषण करती प्रतीत होती है। सप्तम श्रेणी की सासें 'शिकायत प्रधान' होती हैं। मुंह पर थप्पड़ की तरह अपनी शिकायतें दागती रहती है। ऐसी सासों को झेलने के लिए जरूरी है कि बहुएं अपने कानों को हमेशा दुरुस्त रखें। अथवा सास की बात को एक कान से सुने और दूसरे से निकाल दे। अष्टम श्रेणी श्भक्ति प्रधानश सासों की है। उनका ज्यादातर समय बहू पुराण पर बतियाते हुए पूजा पाठ करने, माला जपने या भजनकीर्तन करने में व्यतीत होता है। उनके शरीर में कभी–कभी सास की ओरिजिनल फोरम भी अवतरित होती रहती है। बहू के कारनामों के टर्निंग प्वाइंट से भी वे मुक्त नहीं होती। माला घुमाते वे बहू को हुक्म देने के विस्फोटक बीज मंत्रों का उच्चारण भी करती है रहती है।

लेकिन यह तथ्य भी बेहद महत्वपूर्ण है कि वर्तमान समय में आधुनिकता के दौर में सासों की दशा बेहद खराब है। हम दो हमारे दो के फैशन में एकल परिवारों में सास–ससुर अवांछित सदस्य समझे जाने लगे है। अतीत के आक्रामक रूप से पिछड़ कर अब सास सुरक्षात्मक भूमिका तक सीमित हो गई हैं। अब जमाना ही कहाँ रहा जब सास की झिड़कियों को प्रसाद समझकर बहुएं उन पर अमल करती थी। सासों को सर्वत्र आदर सम्मान प्राप्त था। वर्तमान तो 'जैसे को तैसा' का युग है, इसलिए बदले जमाने में तो सासों का शास्त्रीय रूप दुर्लभ होता जा रहा है।

यह भी सत्य है कि सास–बहू की खटपट कभी खत्म नहीं होती। उनका कोल्ड वार जारी रहता है। बहू या जमाई राजा, उन्हें अपनी–अपनी सासूमां की अंतहीन शिकायतें सुननी ही पड़ती है। शीत युद्ध लड़ना उनकी विवशता होती है, वह चाहे मीठी हो या कड़वी। समाज का ताना–बाना ही ऐसा बुना गया है कि आम तौर पर उन्हें नाराज करने का रिस्क कोई नहीं लेता। फिलहाल सासों की शोचनीय हालत से लगता है कि उन्हें सरकारी संरक्षण की जरूरत पड़ने वाली है। 'सेव टाइगर' की तरह 'सेव मदर इन लॉ' की योजना सरकार को लॉन्च करनी पड़ेगी, क्योंकि यदि यही हाल रहा तो सासें धीरे–धीरे अपना मूल स्वरूप खोकर अतीत की धरोहर मात्र रह जाएगी।

भाड़ में जाए टमाटर

राजेन्द्र कुमार सिंह
नासिक (महाराष्ट्र)

कभी–कभी आदमी भी पद और प्रतिष्ठा का रोब दिखाकर धाक जमा लेता है। ऐसी खूबियां तकरीबन सभी में पाई जाती है। सब्जियों में भी यही हाल प्याज और टमाटर का है। ससुरा रह– रहकर अपना भाव बढा,देर–सबेर अपना रोब जमा ही देता है। टमाटर ही एक ऐसा सब्जी है जो रब जी ने इसको ऐसा वरदान दिया है कि इंसान इसके स्वाद को नजरअंदाज नहीं कर सकता। यह सभी सीजन में सब के दिलों पर राज करता है।चाहे वह वेजेटेरियन हो या ननवेजेटेरियन। इसकी उपस्थिति सबके साथ रहती है। जहां भी रहता है बनाकर रखता है। अपनी महिमा का बखान करा देता हैं। मटन हो या मुर्गा,मछली हो या सब्जी इसके बिना मजा नहीं आता। सलाद भी इसके बिना मजा नहीं देता। कच्चा खाए या पकाकर, लोग खाते हैं दबाकर।आज टमाटर का भाव इतना हाई हो गया है जो आम आदमी इनके तक पहुंचने के लिए क्वालीफाई नहीं कर पा रहे हैं। हाल–फिलहाल अपने कंट्री में इनके पास पहुंचने के लिए इंट्री फी बहुत हाई है। कभी थोक भाव में हर घर में इनका स्वागत करते थे। आज मीडिया में इनका खुब स्वागत हो रहा है। मीडिया के दृष्टि में सारा दिन ब्रेकिंग न्यूज की तरह यूज हो रहे हैं। चोखा, चटनी, सलाद तक में इनकी उपस्थिति दर्ज रहती थी। आज इनकी उपस्थिति दुर्लभ हो गया है।

आज के दौर में यह विआईपीओके यहां काफी देखे जा रहे हैं। उनके यहां इनका हमेशाआना–जाना लगा हुआ है। आज आम आदमी इनका नाम सुन नाक–भौ सिकोड़ रहा है। अपना ठीकरा सरकार के उपर फोड़ रहा है। इनके वगैर नमक के साथ रोटी तोड़ रहा है। कभी झोला भर–भरकर लाता था, आज छटाक में आ रहा है। आज टमाटर का यूज करना प्रतिष्ठा का विषय बन गया है।

हमारे एक मित्र हैं। टमाटर का स्वाद भूल सा गए हैं। नेता टाइप आदमी हैं। हमेशा उलुल–जुलूल हरकतें करते रहते हैं इसलिए हमेशा लोगों ने टमाटर फेंक–फेंककर इनका भरपूर स्वागत किया है। आज वह बेहद दुखी हैं। कहते हैं

पहले हल्की–फुल्की हरकत करने पर भी कई किलो टमाटर फेंककर स्वागत कर देते थे। आज उन हरकतों में कई गुणा वृद्धि हो गई है या यूं कहें जबरदस्त इजाफा हुआ है। लेकिन जनता ने उनके स्वागत में आज एक भी टमाटर नहीं फेका। सोच–सोचकर परेशान हूं मित्र, स्थिति पैदा हो गई है विचित्र। उस समय मंच पर फेंका हुआ टमाटर झोला में भरकर घर लाते थे। आजू–बाजू में अपने बच्चे के दबारा सभी घरों में तीन–चार किलो भेजवा देते थे। हमलोग भी ये आश लगाए रहते थे चलो जाने दो अपना नेता जहमतलाल भैया है न। टमाटर की कमी नहीं खलेगी। अपना जैसे पहले चला है वैसा चलती रहेगी। अपने पड़ोसी भैया जहमतलाल जब तक रहेंगे टमाटर मिलती रहेगी। लेकिन उनके लंगोटिया यार रहमतलाल जो मंच पर दर्शक टमाटर फेंकते थे रहमतलाल झोले में समेटते थे, रखते थे। पहले से अधिक हरकत करने के बाद भी दर्शकों दबारा टमाटर फेंक–फेंककर मारने में बेतहाशा बरकत या वृद्धि नहीं देख अवाक हैं। तब हम सब पड़ोसियों को लगने लगा है टमाटर का भाव वाकई आसमान छू रहा है। कभी भाव बढ़ने पर यही पड़ोसियों ने जब टमाटर पर किसी दूसरे से भाव को लेकर तनाव उत्पन्न होता तो ये लोग उतने ही ताव में यह कहते नहीं चुकते थे–'भाड़ में जाए टमाटर। जैसा पहले खाते थे आज भी खाते हैं।'

कभी सत्ता पक्ष के नेताओं का भाव बढ़ा था लेकिन वक्त के तकाजा को देखते हुए अपने दांव को सही दिशा प्रदान नहीं किए। नतीजा यह हुआ कि सत्ता पक्ष का भाव धड़ाम से गिर गया।

आज जनता को लगने लगा है उनके हाथों में कमान थमाकर अपने इमान को गिरवी रखने जैसा प्रतीत होने लगा है। उनके प्रति चाव घटने लगा है।टमाटर साहब का रवैया भी वैसा ही हो गया है। अभी इनका भाव चढ़ा है। कब तक चढ़ा रहेगा। इनके भी भाव का ग्राफ हाफ से भी कम हो जाएगी। आम जनता उस दिन जमकर टमाटर खाएगी।

कविता

राहुल प्रजापति

मुझे अपने गम को भूलना पड़ेगा
न चाहकर भी मुस्कुराना पड़ेगा।
ये दुनिया कुछ नहीं देने वाली
मुझे घर से बाहर जाना पड़ेगा।
मंजिल मिलेगी यकीं है मुझे
बस खुद को रातों को जागना पड़ेगा।
बदल जाता है जरूर पर आदमी
मुझे कुछ कर दिखाना पड़ेगा ॥

गांव की सड़क

नाटकीयता से
कहीं बहुत दूर
वन फूलों से घिरी
ताकती हुई अपने
सीधे सादे आसमान को
जिसमें कहीं शब्द थे कोई
तो बच्चों के आंचलिक शोर के
जो अभी तक नहीं हो पाए यांत्रिक,
सदा बांटती रही
सोंधी गंध
सहती रही सबके
बचपन को
जो करता रहा खरोंचें
और रौंदता रहा,
मगर वह बराबर
जाती रही मेरे
साम्यवादी गांव की ड्योढ़ी तक,
देख रहा हूं
या है कोई स्वप्न
यह वही सड़क है
लगता है कुछ
आधुनिक हो गई है
पहचानती नहीं
न ही बुलाती
देखती तक नहीं
दब चुका है प्यार
चीखते हैं किनारे खड़े वृक्ष
बनफूलों को निगल लिया है
इसकी क्षुधा ने
घुट गई है चलते रोलरों में
वह सोंधी गंध
हो गया है कोलतार से
चेहरा विकृत
रह गया है बस मुझे याद
वह अतीत।
उग आए हैं इसके
हाथों पे पत्थर
फेंकती है हर पथिक पर,
अब यह
नहीं जाती है गांव की
किसी देहरी या द्वार तक
अब यह जाती है
बहुत दूर
हर उस ओर
जहां नहीं जा पाता है गांव
अब यह शहरी है
तथाकथित शहरी
मेरे वही पुराने
गांव की नई सड़क।

पंकज मिश्र 'अटल'

चमक उठेगी अयोध्या तीन दर्जन धर्मस्थलों का होगा कायाकल्प

लोक पहल

अयोध्या। विश्व के पर्यटन मानचित्र में अपना प्रमुख स्थान बना चुकी राम की नगरी अयोध्या में न केवल भव्य राम मन्दिर का निर्माण हो रहा है बल्कि अयोध्या नगरी का भी कायाकल्प करने के लिए सरकार पूरी तरह मुस्तैद है। रामनगरी अयोध्या के धार्मिक पर्यटन स्थलों के कायाकल्प की तैयारी है। यहां के 37 ऐसे स्थलों को विकसित करने और पर्यटन सुविधा में बढ़ोत्तरी के लिए 34.55 करोड़ रुपये का आवंटन हुआ है। अयोध्या व उसके आसपास विभिन्न पौराणिक और ऐतिहासिक कुंडों, मठ–मंदिरों, आश्रमों एवं पर्यटन स्थलों का विकास एवं निर्माण तेज है। इस बीच राम नगरी अयोध्या के कायाकल्प के लिए भी काम शुरू किया जा रहा है। इसके लिए उत्तर प्रदेश शासन ने जिले के 37 धार्मिक पर्यटन वाले स्थलों का जीर्णोद्धार करने और पर्यटन सुविधा विकसित किए जाने के लिए धन की पहली किस्त जारी कर दी है।

जिलाधिकारी नितीश कुमार ने बताया कि इन 37 धार्मिक पर्यटन स्थलों के फसाड ट्रीटमेंट और पर्यटन अवस्थापना सुविधाओं के विकासधनिर्माण कार्य के लिए 68.80 करोड़ रुपये की प्रशासकीय एवं वित्तीय स्वीकृति के साथ ही 34.55 करोड़ रुपये की प्रथम किस्त मिल गई है। इसके जरिए बिल्डिंग एवं आर्ट संरक्षण कार्य, पेंटिंग, लाइटिंग अरेस्ट्रो, फसाड ल्यूमिनेशन, विजिटर एमिनिटीज टॉयलेट, क्लॉर्क रूम, ड्रिंकिंग वाटर एंड शू रेक, स्ट्रीट फर्नीचर, स्ट्रीट लाइट, बेंच, डस्टबिन, रेलिंग फुटपाथ, सीसीटीवी आदि कार्य कार्य कराए जाएंगे। कार्यदायी संस्था उत्तर प्रदेश राज्य पर्यटन विकास निगम लिमिटेड है। बताया कि कार्यदायी संस्था को सभी स्थानों पर शीघ्र कार्य शुरु करने का निर्देश दिया गया है। सभी कार्यों को दिसंबर तक पूर्ण करने का लक्ष्य दिया गया है। जिन स्थलों का जीर्णोद्धार किया जायेगा उनमें जानकी घाट, बड़ा स्थान, दशरथभवन मंदिर, लक्ष्मण किला, मंगल भवन, अक्षरी मंदिर, राम कचेहरी मंदिर, ब्रम्ह कुंड गुरूद्वारा, रिषभ स्थान, पनास मंदिर, सियाराम किला, दिगंबर अखाड़ा, तुलसी चौराहा मंदिर, कौशल्या घाट मंदिर, भारत महल मंदिर, हनुमान मंदिर, कालेराम मंदिर, नेपाली मंदिर, चित्रगुप्त मंदिर, विश्वकर्मा मंदिर, छोटी देवकाली मंदिर, मयूर मंदिर, राम गुलेला मंदिर, करतलिया बाबा मंदिर, तिवारी मंदिर, वेद मंदिर, सिंघम मंदिर, गारापुर मंदिर, मणिराम दास छावनी मंदिर, बरेली मंदिर, रंग महल मंदिर, सीशराज महल मंदिर, मोतीहारी मंदिर, महादेव मंदिर, राम पुस्तकालय मंदिर, विद्या देवी मंदिर, देवकाली कुंड मंदिर, सरोवर मंदिर, धन्यानाष्य कुंड मंदिर आदि शामिल हैं।

मिशन ग्रीन यूपी : हर खेत पर मेड़–हर मेड़ पर पेड़

3000 करोड़ खर्च कर रोपे जाएंगे 35 करोड़ पौधे, 22 जुलाई से शुरू होगा अभियान

लोक पहल

लखनऊ। उप्र को हरा भरा बनाने के लिए योगी सरकार आगामी 22 जुलाई से पौधरोपण अभियान पूरे प्रदेश में शुरू कर रही है। इस अभियान के तहत इस बार करीब 35 करोड़ पौधे रोपे जाने का लक्ष्य रखा गया है। ग्लोबल वार्मिंग को देखते हुए और प्रदेश को हरियाली युक्त बनाने के लिए 22 जुलाई को पौधरोपण अभियान की तैयारियां युद्धस्तर पर चल रही हैं। प्रदेश में इस बार 35 करोड़ पौधे रोपने का लक्ष्य है। इसमें से 30 करोड़ पौधे 22 जुलाई को और 5 करोड़ पौधे 15 अगस्त को रोपे जाएंगे। महाअभियान के तहत पौधों पर करीब 3000 करोड़ रुपये खर्च होंगे। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ बिजनौर और मुजफ्फरनगर से महाअभियान की शुरुआत करेंगे। 22 को सभी स्कूलों और कार्यालयों में आधे दिन काम होगा और आधे दिन पौधपोपण में हिस्सा लेंगे। ये जानकारी पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) डॉ. अरुण कुमार सक्सेना ने दी। पौधरोपण महाअभियान की जानकारी देते हुए डॉ. सक्सेना ने बताया कि वर्ष 23–24 के मानसून सीजन में प्रदेश के 85 शासकीय विभागों और आमजनों के सहयोग से वन भूमि, सामुदायिक भूमि, अन्य राजकीय भूमि, कृषि व निजी भूमि पर पौधरोपण कराया जा रहा है। अभियान के तहत पेड़ लगाओ पेड़ बचाओ और हर खेत पर मेड़–हर मेड़ पर पेड़ के जरिए लोगों को जोड़ा जा रहा है।

चुनाव की तरह इस अभियान के लिए भी सेक्टर मजिस्ट्रेट की तैनाती की गई है। उन्होंने बताया कि एक पौधे पर 67 से 100 रुपये का खर्च आएगा। यानी 35 करोड़ पौधे रोपने पर करीब 3000 करोड़ रुपये खर्च होंगे। उन्होंने पौधों को सुरक्षित रखने के लिए पौधे उसी स्थान पर लगाने की अपील की, जहां उनकी देखभाल आसानी से की जा सके।
अपर मुख्य सचिव वन एवं पर्यावरण मनोज सिंह ने बताया कि मुख्यमंत्री 22 जुलाई को बिजनौर में विदुर कुटी और मुजफ्फरनगर में शुक्र तीर्थ से अभियान का आरंभ करेंगे। उन्होंने बताया कि स्कूलों में कक्षा 6 से कक्षा 8 तक के बच्चों का सहयोग प्राप्त कर बाल पौध रोपण भंडारा का आयोजन किया जाएगा। भंडारे में बच्चों को आम, अमरूद आदि की कलमें और पौध दी जाएंगी। इसे वह घर या स्कूलों में रोप सकेंगे।

योगी मंत्रिमंडल का होगा विस्तार, ओपी राजभर और दारा सिंह बनाए जाएंगे मंत्री

लोक पहल

लखनऊ। योगी सरकार 2.0 का पहला मंत्रिमंडल विस्तार अगस्त के पहले सप्ताह में होने की संभावना है। मंत्रिमण्डल विस्तार में सुभासपा के अध्यक्ष ओमप्रकाश राजभर और सपा छोड़कर भाजपा में शामिल हुए पूर्व मंत्री दारा सिंह चौहान को कैबिनेट मंत्री बनाया जा सकता है। वहीं योगी सरकार 1.0 में मंत्री रहे कुछ पूर्व मंत्री और विधायक भी मंत्री पद के लिए लखनऊ से दिल्ली तक दौड़ लगा रहे हैं।

सुभासपा के राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (एनडीए) में शामिल होने के बाद गठबंधन की शर्त के तहत ओमप्रकाश राजभर को कैबिनेट मंत्री बनाया जाना है। वहीं दारा सिंह चौहान को भी पुनः मंत्रिमंडल में जगह मिलनी है। पार्टी ने मंत्रिमंडल विस्तार को लेकर कवायद शुरू कर दी है। आगामी लोकसभा चुनाव के मद्देनजर जातीय समीकरण के लिहाज से राजभर और दारा सिंह के अतिरिक्त भी दो–तीन मंत्री और बनाए जा सकते हैं। पूर्व जलशक्ति मंत्री महेंद्र सिंह भी मंत्री पद की दौड़ में शामिल हैं।
पूर्व एमएसएमई मंत्री सिद्धार्थनाथ सिंह, पूर्व ऊर्जा मंत्री श्रीकांत शर्मा और पूर्व परिवहन राज्यमंत्री स्वतंत्र प्रभार अशोक कटारिया भी मंत्री पद की दौड़ में हैं। माट से विधायक राजेश चौधरी भी मंत्री पद के लिए प्रयासरत हैं। केंद्रीय नेतृत्व की हरी झंडी मिलते ही जुलाई के चौथे सप्ताह से लेकर अगस्त के पहले सप्ताह तक शपथग्रहण समारोह हो सकता है।

'इंडिया' से घबराई भाजपा, ये हमारी सेकुलर सोच का प्रतिबिंब है

लोक पहल

लखनऊ। विपक्षी दलों के गठबंधन 'इंडिया' में शामिल समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव ने सत्तारूढ़ भाजपा पर तंज कसा है। उन्होंने कहा कि भाजपा समावेशी विपक्षी गठबंधन इंडिया के नाम से घबरा गई है। इंडिया का संदेश विकास और समावेश का है। यह हमारी सोशलिस्ट और सेकुलर सोच का प्रतिबिंब है। अखिलेश यादव ने कहा कि देश की जनता इस बार भाजपा की विदाई कर देगी।
उन्होंने कहा कि इंडिया गठबंधन की जीत तभी तय हो गई थी, जब भाजपा ने अपने गठबंधन की बैठक उसी तारीख में बुला ली। उन्होंने कहा कि जो समस्याएं हैं, वह जस की तस दिखाई दे रही हैं। बेरोजगारी और महंगाई बढ़ती जा रही है। कर्नाटक में जनता ने सरकार बदल दी, क्योंकि वहां 40 फीसदी कमीशन का भ्रष्टाचार था।

यूपी में लागू होगी मुख्यमंत्री खेत सुरक्षा योजना

अब आवारा पशु नहीं कर सकेंगे खेतों की बर्बादी

लोक पहल

लखनऊ। उप्र में आवारा पशुओं की समस्या विकराल रूप धारण कर रही है। खासतौर से ग्रामीण क्षेत्रों में खेतों में खड़ी फसलों को नुकसान पहुंचाने के समाचार आये दिन मिलते रहते है। वहीं आवारा पशुओ द्वारा हमला करने से कई किसानों की जान भी जा चुकी है। इस समस्या के निराकरण के लिए योगी सरकार एक नई योजना लागू करने जा रही है। निराश्रित पशुओं से खेतों में खड़ी किसानों की फसलों को नुकसान अगले लोकसभा चुनाव में मुद्दा न बने, इसलिए योगी सरकार अभी तक बुंदेलखंड में लागू सोलर फेंसिंग योजना को पूरे प्रदेश में मुख्यमंत्री खेत सुरक्षा योजना के रूप में लागू करने की तैयारी कर रही है।
गौरतलब कि निराश्रित पशुओं की समस्या को लेकर विपक्ष समय–समय पर सरकार पर हमले करता रहा है। पिछले विधानसभा चुनाव में भी यह मुद्दा बना था। तब भाजपा के लिए प्रचार करने आए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने चुनावी मंच से यह आश्वासन दिया था कि राज्य सरकार इस समस्या से निपटने का इंतजाम करेगी।

बुंदेलखंड में निराश्रित पशुओं की समस्या को देखते हुए वहां बुंदेलखंड पैकेज के तहत सोलर फेंसिंग योजना लागू की गई है। सोलर फेंसिंग में किसानों की फसल को पशुओं से बचाने के लिए खेतों को बाड़ से घेरा जाता है। बाड़ में सौर ऊर्जा के माध्यम से 12 वोल्ट का करेंट प्रवाहित होता है। इससे सिर्फ पशुओं को झटका लगता है, उन्हें कोई नुकसान नहीं पहुंचता है। पशु के बाड़ से टकराने पर हल्के करंट के साथ सायरन की आवाज भी होती है। इससे मवेशी और जंगली जानवर जैसे कि नीलगाय, सुअर, बंदर आदि खेत मे खड़ी फसल को क्षति नहीं पहुंचा सकेंगे। मुख्यमंत्री खेत सुरक्षा योजना किसानों को पूरे प्रदेश में राज्य सरकार की योजना के तौर पर लागू करने की तैयारी है। योजना के लिए प्रस्तावित बजट 75 करोड़ रुपये से बढ़ाकर 350 करोड़ रुपये कर दिया गया है। कृषि विभाग इस योजना का ड्राफ्ट तैयार कर चुका है। शीघ्र ही इस योजना को कैबिनेट से मंजूरी दिलाने की तैयारी है। कैबिनेट की मंजूरी के बाद इसे पूरे प्रदेश में लागू किया जाएगा।

महाकुंभ 2025 में विदेशों की तर्ज पर होंगे वेंडिंग जोन

लोक पहल

प्रयागराज। 2025 में प्रयागराज में होने वाले महाकुंभ को लेकर सरकार ने तैयारियां शुरू कर दी है। इस महाकुंभ को भव्य बनाने के लिए तमाम तरह की बड़ी–बड़ी परियोजना पर काम शुरू हो गया है। इन परियोजनाओं के पूरा होने के बाद महाकुंभ 2025 की आभा देखते ही बनेगी। अभी से ही सारे प्रबंध होने लगे हैं। इन परियोजनाओं पर लगभग 33 हजार करोड़ रुपये का निवेश किया जायेगा। शहर से लेकर संगम तक स्वच्छता के साथ ही सोलर स्ट्रीट लाइट की जगमग होगी तो स्ट्रीट वेंडरिंग भी अंतरराष्ट्रीय स्तर पर दिखेगी। स्ट्रीट वेंडर विशेष थीम पर होंगे। यहां भी पेरिस और लंदन की तरह स्ट्रीट वेंडिंग जोन बनाए जाएंगे। अभी शहर में दो वेंडिंग जोन स्थापित हैं।

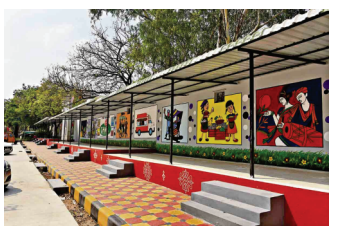

महाकुंभ के पहले 18 अन्य नए वेंडिंग जोन स्थापित किए जाएंगे। इन वेंडिंग जोन में डस्टबिन, टायलेट, पेयजल की सुविधा उपलब्ध होगी। सतरंगी लाइटिंग से ये खास खाने–पीने की मार्केट जगमग रहेगी। एक डिजाइन और एक कलर में वेंडिंग जोन लोगों को आकर्षित करेगी। स्ट्रीट वेंडर चिह्नित कर डिजिटल रजिस्ट्रेशन का कार्य शुरू करा दिया गया है। इन स्ट्रीट वेंडरों को प्रधानमंत्री स्वनिधि योजना के तहत 10 से 20 हजार रुपये का ऋण दिया जाएगा। महाकुंभ मेला को जाने वाले सभी प्रमुख मार्गों पर ये स्ट्रीट वेंडिंग जोन स्थापित किए जाएंगे। इन वेंडिंग जोन में प्रयागराज के चाट–पकौड़े के साथ ही फुल्की, दही–जलेबी, समोसे, छोले–भटूरे, भाजी–पूरी, छोला–चावल, सांभर बड़ा, इडली–डोसा, बाटी–चोखा, बाटी–चूरमा के साथ ही पूरे भारत के व्यंजन परोसे जाएंगे।

दहेज लिया तो नहीं मिलेगी सरकारी नौकरी

लोक पहल

लखनऊ। उप्र सरकार ने भ्रष्टाचार और दहेज प्रथा जैसे सामाजिक कुप्रथा को दूर करने के लिए सरकारी नौकरी पाने वाले युवाओं के सामने शर्ते रख दी है। इन शर्तो के अनुसार अब अगर सरकारी नौकरी कर रहे युवा भ्रष्टाचार या दहेज प्रथा में लिप्त पाए गये तो उनकी नौकरी पर आंच आ सकती है। यूपी में सरकारी नौकरी पाने वाले युवाओं को सरकार की दो शर्तें अब अनिवार्य रुप से पूरी करनी होंगी। उन्हें अपने संपत्ति बताने के साथ–साथ दहेज संबंधी एक शपथ पत्र भी भरना होगा। नई नई सरकारी नौकरी पाने वाले युवाओं को नियुक्ति के साथ ही संपत्ति की घोषणा करनी पड़ेगी। साथ ही दहेज न लेने का शपथपत्र भी उन्हें अनिवार्य रूप से देना होगा। ऐसे कई अहम शपथपत्र उन्हें आदेश पत्र प्राप्त करने के एक महीने के अंदर जमा करने होंगे।
राज्य व प्रवर अधीनस्थ सेवा परीक्षा में सफलता प्राप्त करने वाले युवाओं को नौकरी से पहले कई शपथपत्र और प्रमाण पत्र देने होंगे। सभी अभ्यर्थियों को नियुक्ति से पहले कर्जदार व डिफाल्टर न होने का घोषणापत्र देना पड़ेगा। एक से अधिक पति या पत्नी न होने की घोषणा करनी होगी। दहेज न लेने का प्रमाणपत्र देना होगा। उन्हें अपनी ऐसी चल व अचल संपत्तियों की घोषणा करना होगी, जिसके वे स्थायी सदस्य हों। सरकार द्वारा ऐसा करने के पीछे की मंशा यह है कि वह नौकरी देने से पहले व्यक्ति की वैवाहिक स्थिति और दहेज को लेकर उसकी सोच को जांच लेना चाहती है।

स्वामी शुकदेवानन्द विधि महाविद्यालय

नैक बी+

मुमुक्षु आश्रम, शाहजहाँपुर

प्रवेश का स्वर्णिम अवसर

विधि त्रिवर्षीय (एल.एल.बी.) एवं विधि स्नातकोत्तर (एल.एल.एम.) पाठ्यक्रम में प्रवेश परीक्षा हेतु ऑनलाइन आवेदन

ऑनलाइन आवेदन की तिथि

01 जुलाई 2023 से 25 जुलाई 2023 तक

विश्वविद्यालय बेवसाइट

www.mjpru.ac.in

अधिक जानकारी हेतु सम्पर्क करें

05842-796171, 796174,
7007902156, 9415703943, 9473938629, 9453721669

नोट–स्नातक उत्तीर्ण/स्नातक अंतिम वर्ष की परीक्षा में सम्मिलित विद्यार्थी एल.एल.बी. (त्रिवर्षीय) प्रवेश परीक्षा में आवेदन कर सकते है।

लोक पहल, राष्ट्रीय हिन्दी साप्ताहिक, मुमुक्षु आश्रम, शाहजहॉपुर, प्रधान संपादक अरूण पाराशरी

लोक पहल हिन्दी साप्ताहिक स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक डा. अवनीश कुमार मिश्रा द्वारा शाहजहॉपुर प्रिन्टर्स जज साहब वाली गली, तारीन बहादुरगंज जिला शाहजहॉपुर 242001 से मुद्रित व 160 रोशनगंज लक्ष्मी राईस मिल, शाहजहॉपुर 242001 उ0प्र से प्रकाशित। संपादक–सुयश सिन्हा मो. 9935740205 E-mail : lokpahalspn@gmail.com समस्त विवादों का न्याय क्षेत्र शाहजहॉपुर होगा।